Tab 1

20 सूरए ताहा

आयत का विवरण:
यह सूरह ता हा (20:1) की पहली आयत है। इसमें "ता हा" का उल्लेख किया गया है, जो एक मुकर्रर हुरूफ़ (अलिफ़ाज़ या अक्षर) में से है। ऐसे अक्षरों का अर्थ और उद्देश्य परंपरागत इस्लामी व्याख्याओं में विवादास्पद है।

आयत का नंबर और अनुवाद:
सूरह ता हा, आयत 1:
"ता हा"
(इसका स्पष्ट अनुवाद उपलब्ध नहीं है क्योंकि इसे अरबी अक्षर के रूप में लिया जाता है।)

संदर्भ:
सूरह ता हा, आयत 1, कुरान मजीद।

आधारित तत्व (Nyaya Element):
प्रमेय (Object of Knowledge) और प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   "ता हा" एक ऐसा वाक्यांश है जिसका स्पष्ट अर्थ कुरान में नहीं दिया गया है। इसे अल-मुक़त्ता'अत (अलग-अलग अक्षर) में से एक माना गया है, जिनका अर्थ केवल अल्लाह के ज्ञान तक सीमित है।

2. **हेतु (Reason):**
   किसी भी धार्मिक या दार्शनिक विचार को तब तक प्रामाणिक नहीं माना जा सकता जब तक कि उसका स्पष्ट उद्देश्य या तात्त्विक अर्थ न हो। "ता हा" का कोई ज्ञात या तर्कसंगत अर्थ नहीं है।

3. **उदाहरण (Example):**
   दुनिया के अधिकांश धार्मिक ग्रंथों में स्पष्टता का महत्व होता है ताकि अनुयायी उन्हें समझ सकें।

किसी भी कथन का अर्थ अस्पष्ट छोड़ना तर्क और समझ के लिए बाधा बन सकता है। उदाहरण के लिए, वैदिक दर्शन में मंत्रों और श्लोकों का गहरा अर्थ होता है, और इन्हें उचित रूप से समझाया जाता है।

4. **उपनय (Application):**
   "ता हा" जैसे हुरूफ़ का कोई स्पष्ट अर्थ न होने के कारण यह प्रश्न खड़ा होता है कि यह आयत मानवता के लिए कैसे उपयोगी हो सकती है। किसी धार्मिक ग्रंथ का उद्देश्य ज्ञान, नैतिकता, और जीवन के सुधार का संदेश देना होना चाहिए। अस्पष्टता से यह उद्देश्य पूरा नहीं होता।

5. **निगमन (Conclusion):**
   इस आयत का स्पष्ट अर्थ न होने के कारण इसे तार्किक रूप से स्वीकार करना कठिन है। "ता हा" का वास्तविक अर्थ और उपयोगिता अज्ञात है, जिससे यह समझने में बाधा उत्पन्न होती है।

निष्कर्ष:

"ता हा" जैसे मुकर्रर अक्षरों का अर्थ न समझ पाना Nyaya दर्शन के अनुसार तार्किक रूप से असंतोषजनक है। ज्ञान का उद्देश्य स्पष्टता और उपयोगिता है, जो यहां अनुपस्थित है। यदि इस आयत का उद्देश्य केवल रहस्यमयता या अल्लाह के ज्ञान की अद्वितीयता को दर्शाना है, तो यह मानवता के लिए व्यावहारिक या नैतिक लाभ प्रदान नहीं करता। इसलिए, यह आयत तार्किक दृष्टिकोण से अपर्याप्त प्रतीत होती है।

आयत का विवरण

आयत: "हमने तुम पर कुरान इसलिए नाज़िल नहीं किया कि तुम (इस क़दर) मशक्कत उठाओ।"
संदर्भ: सूरह ताहा, 20:2

आधारित तत्व (Nyaya Element):

प्रमेय (Object of Knowledge)
यहाँ "कुरान के नाज़िल होने का उद्देश्य" का वर्णन किया गया है, लेकिन इस कथन का तात्त्विक और प्रमाणिक आधार अस्पष्ट है।

विश्लेषण:

1. **आयत का उद्देश्य और प्रमाण का अभाव:**
 आयत यह दावा करती है कि कुरान को किसी प्रकार की "मशक्कत" (कठिनाई) उठाने के लिए नाज़िल नहीं किया गया है। लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि इसका वास्तविक उद्देश्य क्या है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी ज्ञान का तात्त्विक (epistemological) आधार प्रमाणित होना चाहिए। यहाँ यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है और प्रमाण से रहित है।

2. **मशक्कत का अर्थ और संदर्भ:**
    - **"मशक्कत" शब्द का प्रयोग यहाँ एक व्यक्ति (पैगंबर) की व्यक्तिगत कठिनाइयों को संबोधित करने के लिए किया गया है।**
    - **लेकिन यह नहीं समझाया गया कि यदि कुरान के नाज़िल होने का उद्देश्य कठिनाई उठाना नहीं है, तो इसका वास्तविक और सार्वभौमिक उद्देश्य क्या है।**
    - **Nyaya दर्शन के "प्रमेय" सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान या संदेश को स्पष्टता और प्रमाण के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।**
3. **कथन की सार्वभौमिकता का अभाव:**
    - **कुरान का उद्देश्य किसी एक व्यक्ति या समाज के लिए नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए होना चाहिए। लेकिन यहाँ यह आयत केवल पैगंबर मोहम्मद की व्यक्तिगत स्थिति को संदर्भित करती है, जो इसे सार्वभौमिक (universal) दृष्टिकोण से कमजोर बनाता है।**
    - **यह "प्रमेय" की कसौटी पर असफल है क्योंकि यह न तो सार्वभौमिक सत्य प्रस्तुत करता है और न ही सभी मनुष्यों के लिए प्रासंगिक है।**
4. **अन्य शास्त्रों से तुलना:**
    - **भगवद गीता: गीता में "कर्मयोग" के माध्यम से व्यक्तिगत और सामाजिक विकास का मार्ग दिखाया गया है, जिसमें कठिनाई (तप या परिश्रम) का महत्व स्पष्ट रूप से समझाया गया है। उदाहरण: गीता 2.47 में कहा गया है, "कर्म करो, फल की चिंता मत करो।" यह संदेश स्पष्ट और सार्वभौमिक है।**
    - **मनुस्मृति: मनुस्मृति में भी यह उल्लेख मिलता है कि जीवन में कठिनाई और परिश्रम से आत्मज्ञान प्राप्त होता है। उदाहरण: "तपसा कल्याणम्।"**
5. **इसके विपरीत, यह आयत व्यक्तिगत कठिनाइयों को अस्वीकार करती हुई प्रतीत होती है, जो किसी भी सार्वभौमिक शिक्षण या तात्त्विक सिद्धांत से मेल नहीं खाती।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

1. **प्रत्याज्ञा (Proposition):**
   कुरान को नाज़िल करने का उद्देश्य कठिनाई उठाना नहीं है।
2. **हेतु (Reason):**
   इस उद्देश्य का कोई तात्त्विक आधार या प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है।
3. **उदाहरण (Example):**
   - **यदि कोई ग्रंथ सार्वभौमिक है, तो उसका उद्देश्य स्पष्ट और सभी के लिए लाभकारी होना चाहिए।**
   - **गीता जैसे ग्रंथों में कर्म और तप को मानव जीवन के लिए आवश्यक बताया गया है।**
4. **उपनय (Application):**
   - **इस आयत का उद्देश्य केवल एक व्यक्ति (पैगंबर) को संबोधित करना है, जो इसे सार्वभौमिक सत्य से दूर कर देता है।**
5. **निगमन (Conclusion):**
   - **यह आयत "प्रमेय" और "प्रमाण" के सिद्धांतों से असंगत है क्योंकि इसमें न तो स्पष्ट उद्देश्य है और न ही किसी प्रमाण का उल्लेख।**

निष्कर्ष:

यह आयत तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर है क्योंकि इसमें किसी सार्वभौमिक उद्देश्य या प्रमाण का अभाव है। Nyaya दर्शन के "प्रमेय" सिद्धांत के अनुसार, किसी भी ज्ञान का उद्देश्य स्पष्ट और प्रमाणित होना चाहिए। इसके विपरीत, यह आयत केवल व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित है, जो इसे मानवता के लिए अप्रासंगिक और तर्कहीन बनाती है।

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
20:2	प्रमेय	उद्देश्य और प्रमाण का अभाव

आयत 3-5 का विश्लेषण (सूरह ताहा, 20:3-5)

आयत 3

अनुवाद: ”मगर जो शख़्स ख़ुदा से डरता है, उसके लिए (कुरान को) नसीहत क़रार दिया गया है।”
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **डर और नसीहत का तर्क:**
    - **आयत में यह दावा किया गया है कि ”ख़ुदा का डर” ही नसीहत पाने का कारण है। लेकिन यह तर्क प्रमाणित नहीं करता कि किसी व्यक्ति के लिए ”डर” ज्ञान या प्रेरणा का अनिवार्य साधन क्यों होना चाहिए।**
    - **Nyaya दर्शन में, ज्ञान और प्रेरणा को ”तर्क” और ”प्रमाण” पर आधारित होना चाहिए, न कि केवल भय पर।**
    - **उदाहरण: भगवद गीता 2.56 में कहा गया है कि ”धीर व्यक्ति” (जो क्रोध और भय से मुक्त है) ही सच्चे ज्ञान का अधिकारी है। यहाँ भय को एक बाधा बताया गया है, जबकि आयत इसे ज्ञान का साधन मानती है।**
2. **डर और सार्वभौमिकता:**
    - **ज्ञान और नसीहत सभी के लिए समान होनी चाहिए, न कि केवल डर के माध्यम से।**
    - **यह आयत केवल डर के भाव में नसीहत को सीमित करती है, जिससे यह तात्त्विक रूप से सीमित और असंगत हो जाती है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): डर ज्ञान और नसीहत का माध्यम है।**
- **हेतु (Reason): डर को ज्ञान का कारण बताने का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।**
- **उदाहरण (Example): गीता में भय को तात्त्विक ज्ञान प्राप्त करने के मार्ग में बाधा बताया गया है।**
- **उपनय (Application): यह आयत भय को नसीहत का आधार मानती है, जो Nyaya दर्शन के अनुरूप नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ”Hetu” के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि डर को ज्ञान का आधार बनाने का कोई तर्कसंगत कारण नहीं दिया गया।**

आयत 4

अनुवाद: "(ये) उस शै की तरफ़ से नाज़िल हुआ है जिसने ज़मीन और ऊँचे-ऊँचे आसमानों को पैदा किया।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

1. **सृष्टि का दावा:**
   - **यहाँ यह दावा किया गया है कि "ख़ुदा" ने ज़मीन और आसमान को पैदा किया। लेकिन इस कथन का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।**
   - **Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी सत्य को प्रमाण द्वारा समर्थित करना आवश्यक है।**
   - **वैशेषिक दर्शन में सृष्टि की उत्पत्ति पंचमहाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, और आकाश) से मानी गई है, जिसमें कोई एक ईश्वर अनिवार्य नहीं है।**
2. **तथ्य और प्रमाण का अभाव:**
   - **आयत में सृष्टि की उत्पत्ति का दावा किया गया है, लेकिन यह वैज्ञानिक या तात्त्विक दृष्टि से प्रमाणित नहीं है।**
   - **उदाहरण: वैशेषिक सूत्र 1.1.5 में कहा गया है कि सृष्टि पदार्थों की प्राकृतिक क्रियाओं का परिणाम है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): सृष्टि को ख़ुदा ने पैदा किया।**
- **हेतु (Reason): इस दावे का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।**
- **उदाहरण (Example): वैशेषिक दर्शन सृष्टि को प्राकृतिक घटनाओं का परिणाम मानता है।**
- **उपनय (Application): इस आयत का दावा वैशेषिक दर्शन और वैज्ञानिक तथ्यों से मेल नहीं खाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि इसमें दावे का कोई प्रमाण नहीं है।**

आयत 5

अनुवाद: "वही रहमान है, जो अर्श पर (हुक्मरानी के लिए) आमादा व मुस्तईद है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

1. **ईश्वर की हुक्मरानी का दावा:**
    - **आयत में कहा गया है कि "अल्लाह" अर्श (सिंहासन) पर हुक्मरानी करता है। यह दावा बिना किसी स्पष्ट तर्क या प्रमाण के किया गया है।**
    - **Nyaya दर्शन के "व्याप्ति" सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना या तथ्य का प्रभाव और कारण के साथ संबंध होना चाहिए। यहाँ यह स्पष्ट नहीं किया गया कि "अर्श" पर हुक्मरानी का अर्थ क्या है और इसका मानवता से क्या संबंध है।**
2. **तार्किक विसंगति:**
    - **"अर्श पर हुक्मरानी" एक रूपक या कल्पना मात्र प्रतीत होती है।**
    - **वैदिक साहित्य में ईश्वर को "सर्वव्यापी" बताया गया है, जैसे ईशावास्य उपनिषद (1.1) में कहा गया है कि "ईश्वर पूरे जगत में व्यापक है।" इसके विपरीत, यहाँ ईश्वर को केवल "अर्श" तक सीमित कर दिया गया है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): अल्लाह अर्श पर हुक्मरानी करता है।**
- **हेतु (Reason): इस दावे का कोई तात्त्विक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में ईश्वर को सर्वव्यापी बताया गया है।**
- **उपनय (Application): "अर्श पर हुक्मरानी" का दावा ईश्वर की सार्वभौमिकता से मेल नहीं खाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि इसका प्रभाव और कारण स्पष्ट नहीं हैं।**

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
20:3	Hetu	**डर को नसीहत का कारण बताने का तर्कसंगत आधार नहीं है।**
20:4	Pramana	**सृष्टि की उत्पत्ति का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।**

20:5	Vyapti	**"अर्श पर हुक्मरानी" का दावा तात्त्विक और तार्किक दृष्टि से कमजोर है।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत दावे तात्त्विक और तार्किक दृष्टि से प्रमाणित नहीं हैं। Nyaya दर्शन और वैदिक साहित्य के अनुसार, ज्ञान और तर्क का आधार स्पष्ट और प्रमाणिक होना चाहिए। यह आयतें केवल विश्वास और कल्पना पर आधारित हैं, जो इन्हें सार्वभौमिक सत्य से दूर करती हैं।

आयत 6-10 का विश्लेषण (सूरह ताहा, 20:6-10)

आयत 6

अनुवाद: "जो कुछ आसमानों में है, जो कुछ ज़मीन में है, जो कुछ दोनों के बीच में है और जो कुछ ज़मीन के नीचे है, (ग़रज़ सब कुछ) उसी का है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

1. **संपत्ति और स्वामित्व का दावा:**
   - **आयत में यह दावा किया गया है कि समस्त सृष्टि (आसमान, ज़मीन, और इनके बीच और नीचे) अल्लाह की संपत्ति है। लेकिन इसका कोई प्रमाण या तर्क प्रस्तुत नहीं किया गया।**
   - **Nyaya दर्शन के अनुसार, सत्य को प्रमाण (Pramana) के माध्यम से स्थापित किया जाना चाहिए। यह आयत केवल एक विश्वास-आधारित दावा करती है।**
   - **वैदिक साहित्य के अनुसार, सृष्टि का स्वामित्व पंचमहाभूतों का है, और यह संपूर्ण जगत में "ईश्वर" का निवास है (ईशावास्य उपनिषद 1.1)।**
2. **प्रमाण का अभाव:**
   - **यह दावा तार्किक रूप से प्रश्न उठाता है: यदि सब कुछ अल्लाह का है, तो व्यक्तिगत स्वामित्व क्यों है?**
   - **आयत स्वामित्व का सार्वभौमिक दावा करती है, लेकिन इसे तर्कसंगत रूप से सिद्ध नहीं करती।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): सब कुछ अल्लाह का है।**
- **हेतु (Reason): इस दावे का कोई प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक दृष्टिकोण में सृष्टि पंचमहाभूतों का परिणाम है और स्वामित्व का दावा सत्यापित होना चाहिए।**
- **उपनय (Application): बिना प्रमाण के सार्वभौमिक स्वामित्व का दावा असंगत है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि इसमें दावे का कोई प्रमाण नहीं दिया गया।**

आयत 7

अनुवाद: "और अगर तू पुकार कर बात करे (तो भी आहिस्ता करे तो भी) वह यक़ीनन भेद और उससे ज़्यादा पोशीदा चीज़ को जानता है।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

1. **भेद और पोशीदा ज्ञान:**
    - **आयत में यह कहा गया है कि अल्लाह गुप्त और सबसे गुप्त बातों को जानता है। लेकिन इसका कोई तात्त्विक आधार या प्रमाण नहीं दिया गया।**
    - **Nyaya दर्शन के अनुसार, ज्ञान किसी प्रमाणिक स्रोत (Pratyaksha, Anumana, Upamana) पर आधारित होना चाहिए।**
    - **यह दावा ईश्वर की सर्वज्ञता को स्थापित करने का प्रयास करता है, लेकिन इसे तर्कसंगत ढंग से सिद्ध नहीं करता।**
2. **सर्वज्ञता का परीक्षण:**
    - **सांख्य दर्शन के अनुसार, ज्ञान को विवेक और अनुभव के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। सर्वज्ञता का दावा बिना परीक्षण के अस्वीकार्य है।**
    - **गीता (18.63) में अर्जुन से कहा गया है कि "अपने विवेक से विचार करो और निर्णय लो।" यहाँ ईश्वर स्वतंत्र सोच और तर्क पर बल देता है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): अल्लाह भेद और पोशीदा बातों को जानता है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा बिना प्रमाण के किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): सांख्य दर्शन में ज्ञान विवेक और अनुभव पर आधारित है।**
- **उपनय (Application): सर्वज्ञता का दावा Nyaya दर्शन और सांख्य दर्शन के प्रमाण सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि इसमें सर्वज्ञता का कोई प्रमाण नहीं है।**

आयत 8

अनुवाद: "अल्लाह (वह माबूद है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं है। (अच्छे-अच्छे) उसी के नाम हैं।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

1. **एकमात्र ईश्वर का दावा:**
    - **आयत में कहा गया है कि अल्लाह के सिवा कोई अन्य माबूद नहीं है। यह दावा किसी तर्क या प्रमाण से समर्थित नहीं है।**
    - **Nyaya दर्शन के "व्याप्ति" (अनिवार्य संबंध) के अनुसार, किसी भी निष्कर्ष का कारण और प्रभाव का स्पष्ट संबंध होना चाहिए। यहाँ ऐसा नहीं है।**
2. **अन्य ईश्वरों की उपेक्षा:**
    - **वैदिक दृष्टिकोण में, "एकं सद विप्रा: बहुधा वदंति" (ऋग्वेद 1.164.46) कहा गया है कि सत्य एक है, लेकिन ज्ञानी उसे अलग-अलग रूपों में व्यक्त करते हैं।**
    - **इस आयत में अन्य सभी ईश्वर-स्वरूपों का खंडन किया गया है, जो वैश्विक सहिष्णुता के विरुद्ध है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है।**
- **हेतु (Reason): इसका कोई कारण या प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में ईश्वर की विविधता को स्वीकार किया गया है।**
- **उपनय (Application): यह आयत Nyaya दर्शन के "व्याप्ति" सिद्धांत से मेल नहीं खाती।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्क और प्रमाण के अभाव में अस्वीकार्य है।**

आयत 9

अनुवाद: "और (ऐ रसूल) क्या तुम तक मूसा की ख़बर पहुँची है कि जब उन्होंने दूर से आग देखी।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Anumana (Inference)

विश्लेषण:

1. **मूसा का वर्णन:**
   - **आयत में मूसा के आग देखने का उल्लेख है, लेकिन यह एक ऐतिहासिक घटना है। इसका तात्त्विक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।**
   - **Nyaya दर्शन के अनुसार, ऐतिहासिक घटनाओं को तर्क और प्रमाण के साथ प्रस्तुत करना आवश्यक है।**
2. **कथन का उद्देश्य:**
   - **इस आयत में कहानी सुनाने का उद्देश्य स्पष्ट नहीं है। इसका मानवीय और तात्त्विक महत्व नहीं दर्शाया गया।**
   - **गीता (2.47) में कर्म के महत्व को बताया गया है, जबकि यहाँ केवल कहानी का उल्लेख है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): मूसा ने आग देखी।**
- **हेतु (Reason): इसका तात्त्विक उद्देश्य स्पष्ट नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): गीता में हर घटना का मानव जीवन पर तात्त्विक प्रभाव दर्शाया गया है।**
- **उपनय (Application): यह आयत तार्किक रूप से स्पष्ट उद्देश्य प्रदान नहीं करती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत "Anumana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।**

आयत 10

अनुवाद: "तो अपने घर के लोगों से कहने लगे कि तुम लोग (ज़रा यहीं) ठहरो, मैंने आग देखी है। क्या अजब है कि मैं वहाँ (जाकर) उसमें से एक अंगारा तुम्हारे पास ले आऊँ या आग के पास किसी राह का पता पा जाऊँ।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **आग का उपयोग:**
   - **मूसा द्वारा आग का उल्लेख और उसके संभावित उपयोग का तात्पर्य स्पष्ट नहीं किया गया है।**
   - **यह कथन तात्त्विक उद्देश्य (ज्ञान या कर्म का संदेश) प्रस्तुत नहीं करता।**
2. **विचार का अभाव:**
   - **गीता और वेदों में मानवता के लिए उपयोगी विचार प्रस्तुत किए गए हैं, जबकि यह आयत केवल कहानी तक सीमित है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): आग से कुछ लाभ प्राप्त होगा।**
- **हेतु (Reason): यह स्पष्ट नहीं किया गया कि आग का उपयोग कैसे मानवता के लिए लाभकारी होगा।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में अग्नि को ज्ञान और बलिदान का प्रतीक माना गया है।**
- **उपनय (Application): यहाँ तात्त्विक और उपयोगी उद्देश्य का अभाव है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।**

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
20:6	Pramana	**सार्वभौमिक स्वामित्व का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।**
20:7	Prameya	**सर्वज्ञता का दावा बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है।**
20:8	Vyapti	**अन्य ईश्वरों का खंडन तार्किक और प्रमाणिक दृष्टि से असंगत है।**
20:9	Anumana	**मूसा की कहानी का तात्त्विक उद्देश्य स्पष्ट नहीं है।**

20:10	Hetu	**आग का उपयोग और उद्देश्य स्पष्ट नहीं किया गया।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में तात्त्विक उद्देश्य, प्रमाण, और तर्क का अभाव है। Nyaya दर्शन के अनुसार, ज्ञान, उद्देश्य, और प्रमाण आवश्यक हैं, जो इन आयतों में अनुपस्थित हैं। इन आयतों का कथन विश्वास-आधारित है, जो सार्वभौमिक तर्क और मानवीय उपयोगिता से मेल नहीं खाता।

आयत 11-15 का विश्लेषण (सूरह ताहा, 20:11-15)

आयत 11

अनुवाद: "फिर जब मूसा आग के पास आए तो उन्हें आवाज आई।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Pratyaksha (Perception)

विश्लेषण:

1. **आवाज का स्रोत:**
    - **आयत में यह उल्लेख है कि मूसा को आवाज सुनाई दी, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि यह आवाज कहां से आ रही थी और इसका साक्ष्य क्या है।**
    - **Nyaya दर्शन के "प्रत्यक्ष" सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान तभी मान्य होता है जब वह इंद्रियों के प्रत्यक्ष अनुभव से सिद्ध हो। यहां यह दावा किया गया कि आवाज आई, लेकिन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।**
2. **धार्मिक कथाओं का स्वरूप:**
    - **गीता (9.11) में कहा गया है कि अज्ञानी लोग ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझते। इस संदर्भ में, मूसा की यह घटना तात्त्विक दृष्टिकोण से अस्पष्ट है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): मूसा को आग के पास आवाज सुनाई दी।**
- **हेतु (Reason): इसका स्रोत और प्रमाण स्पष्ट नहीं है।**

- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में हर ईश्वर संवाद का अनुभव ऋषियों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किया गया और लिखा गया।**
- **उपनय (Application): बिना प्रत्यक्ष प्रमाण के यह दावा अस्वीकार्य है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत "Pratyaksha" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।**

आयत 12

अनुवाद: "कि ऐ मूसा, बेशक मैं ही तुम्हारा परवरदिगार हूँ, तो तुम अपनी जूतियाँ उतार डालो क्योंकि तुम (इस वक्त) तुआ (नामी) पाकीज़ा चटियल मैदान में हो।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

1. **जूतियाँ उतारने का निर्देश:**
   - **आयत में मूसा को "पवित्र मैदान" में जूते उतारने का निर्देश दिया गया है, लेकिन इसका कारण तर्कसंगत रूप से स्पष्ट नहीं किया गया।**
   - **Nyaya दर्शन में "हेतु" (कारण) का महत्व है। किसी भी निर्देश का स्पष्ट और प्रमाणिक कारण होना चाहिए।**
   - **यह निर्देश केवल एक सांस्कृतिक या धार्मिक परंपरा जैसा प्रतीत होता है, जिसका सार्वभौमिक महत्व नहीं है।**
2. **पवित्रता की परिभाषा:**
   - **वैदिक दृष्टिकोण में, "पवित्रता" मानसिक और शारीरिक शुद्धता से संबंधित है (मनुस्मृति 5.109)। जूते उतारने का धार्मिक या दार्शनिक आधार स्पष्ट नहीं किया गया।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): पवित्र मैदान में जूते उतारना चाहिए।**
- **हेतु (Reason): इसका कारण स्पष्ट नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में पवित्रता मानसिक और शारीरिक शुद्धता पर आधारित है।**
- **उपनय (Application): यह निर्देश तार्किक और सार्वभौमिक नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।**

आयत 13

अनुवाद: "और मैंने तुमको पैग़ाम्बरी के वास्ते मुन्तख़ब किया (चुन लिया) है, तो जो कुछ तुम्हारी तरफ़ वही की जाती है उसे कान लगाकर सुनो।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

1. **पैग़ाम्बरी का दावा:**
   - **आयत में मूसा को पैग़ाम्बर चुने जाने की बात कही गई है। लेकिन, यह चयन किस आधार पर और क्यों किया गया, इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया।**
   - **Nyaya दर्शन के "प्रमेय" सिद्धांत के अनुसार, किसी दावे को ज्ञान का विषय बनाने के लिए उसे प्रमाणिक और तार्किक रूप से स्थापित करना चाहिए।**
2. **विचार का अभाव:**
   - **गीता (2.47) में कर्म और योग्यता के आधार पर कर्तव्यों का निर्धारण होता है। यहां मूसा को पैग़ाम्बर चुने जाने का कोई तात्त्विक आधार नहीं दिया गया।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): मूसा को पैग़ाम्बर चुना गया।**
- **हेतु (Reason): इसका कोई कारण या प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में कर्म और योग्यता के आधार पर कर्तव्य का निर्धारण होता है।**
- **उपनय (Application): यह दावा बिना प्रमाण और तर्क के अस्वीकार्य है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।**

आयत 14

अनुवाद: "इसमें शक नहीं कि मैं ही वह अल्लाह हूँ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ बराबर पढ़ा करो।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

1. **ईश्वर की एकता का दावा:**
   - **आयत में अल्लाह को एकमात्र माबूद बताया गया है। यह दावा किसी तार्किक प्रमाण पर आधारित नहीं है।**
   - **Nyaya दर्शन के "व्याप्ति" सिद्धांत के अनुसार, किसी निष्कर्ष का कारण और प्रभाव स्पष्ट होना चाहिए।**
2. **इबादत और नमाज़ का निर्देश:**
   - **यह निर्देश व्यक्तिगत आस्था पर आधारित है। इसका सार्वभौमिक तात्त्विक या व्यावहारिक महत्व स्पष्ट नहीं किया गया।**
   - **वैदिक दर्शन में उपासना का उद्देश्य आत्मा और परमात्मा का मिलन है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): अल्लाह ही एकमात्र माबूद है।**
- **हेतु (Reason): इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया।**
- **उदाहरण (Example): ऋग्वेद (1.164.46) सत्य की एकता को विविधता में स्वीकार करता है।**
- **उपनय (Application): यह दावा Nyaya दर्शन के "व्याप्ति" सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तार्किक रूप से अस्वीकार्य है।**

आयत 15

अनुवाद: "(क्योंकि) क़यामत ज़रूर आने वाली है और मैं उसे लामहौला छिपाए रखूँगा ताकि हर शख़्स (उसके ख़ौफ से नेकी करे) और जैसी कोशिश की है उसका उसे बदला दिया जाए।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Anumana (Inference)

विश्लेषण:

1. **क़यामत का दावा:**
    - **क़यामत के आने का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या तार्किक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।**
    - **Nyaya दर्शन के "अनुमान" सिद्धांत के अनुसार, भविष्य की घटनाओं का दावा तभी मान्य है जब वे प्रमाणिक कारणों पर आधारित हों।**
2. **भय के माध्यम से नेकी:**
    - **आयत में भय के माध्यम से नेकी करने की बात कही गई है। यह तर्क नैतिकता के विपरीत है, क्योंकि नैतिक कर्म स्वाभाविक और आत्मज्ञान पर आधारित होने चाहिए।**
    - **गीता (3.16) में कहा गया है कि मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन बिना भय के करना चाहिए।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): क़यामत ज़रूर आएगी।**
- **हेतु (Reason): इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत पर बल दिया गया है।**
- **उपनय (Application): भय के माध्यम से नैतिकता का प्रचार तार्किक और नैतिक दृष्टि से अस्वीकार्य है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत "अनुमान" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।**

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
20:11	Pratyaksha	आवाज के स्रोत का कोई प्रमाण नहीं है।
20:12	Hetu	जूते उतारने का कारण तर्कसंगत रूप से स्पष्ट नहीं है।
20:13	Prameya	मूसा को पैग़म्बर चुनने का कोई प्रमाण नहीं दिया गया।
20:14	Vyapti	ईश्वर की एकता का दावा बिना प्रमाण के किया गया।
20:15	Anumana	क़यामत के दावे का कोई तार्किक आधार नहीं है।

निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत दावे तात्त्विक और तार्किक दृष्टि से Nyaya दर्शन के सिद्धांतों पर खरे नहीं उतरते। यह कथन व्यक्तिगत आस्था और भय पर आधारित हैं, जो सार्वभौमिक तर्क और नैतिकता के मानदंडों को पूरा नहीं करते।

आयत 16-20 का विश्लेषण (सूरह ताहा, 20:16-20)

आयत 16

अनुवाद: "तो (कहीं) ऐसा न हो कि जो शख़्स उसे दिल से नहीं मानता और अपनी नफ़सियानी ख़्वाहिश के पीछे पड़ा वह तुम्हें इस (फिक्र) से रोक दे तो तुम तबाह हो जाओगे।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Anumana (Inference)

विश्लेषण:

1. **धर्म न मानने वालों के प्रति दृष्टिकोण:**
    - **आयत में यह कहा गया है कि जो व्यक्ति ईश्वर को नहीं मानता, वह "नफ़सियानी ख़्वाहिश" (आत्म-केंद्रित इच्छाओं) का अनुसरण करता है।**
    - **यह सामान्यीकरण है और तर्कसंगत नहीं है। किसी व्यक्ति का नैतिक या दार्शनिक मूल्यांकन केवल धर्म मानने या न मानने पर आधारित नहीं हो सकता।**
    - **Nyaya दर्शन के "अनुमान" सिद्धांत के अनुसार, एक निष्कर्ष तभी वैध होता है जब वह उचित कारणों और साक्ष्यों पर आधारित हो। यहां यह दावा आधारहीन है।**
2. **धार्मिक असहमति का दंड:**
    - **आयत में "तबाह हो जाओगे" का उल्लेख भय पर आधारित है। यह नैतिकता और सार्वभौमिक करुणा के सिद्धांतों के विपरीत है।**
    - **गीता (2.50) में कर्मयोग के माध्यम से व्यक्तिगत आत्मविकास पर बल दिया गया है, न कि भय या दबाव पर।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): ईश्वर न मानने वाले "नफ़सियानी ख्वाहिश" का अनुसरण करते हैं।**

- **हेतु (Reason): यह तर्क आधारहीन और पक्षपातपूर्ण है।**
- **उदाहरण (Example): नैतिकता धर्म से स्वतंत्र हो सकती है; विभिन्न दर्शन जैसे बौद्ध और जैन धर्म इसका उदाहरण हैं।**
- **उपनय (Application): यह दावा Nyaya दर्शन के "अनुमान" सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तात्त्विक और नैतिक दृष्टि से अस्वीकार्य है।**

आयत 17

अनुवाद: "और ऐ मूसा, यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या चीज़ है?"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Prashna (Questioning)

विश्लेषण:

1. **प्रश्न का तात्पर्य:**
   - **आयत में मूसा से उनकी लाठी के बारे में प्रश्न किया गया है। यह संवाद प्रतीत होता है, लेकिन इसमें कोई तात्त्विक या ज्ञानवर्धक मूल्य नहीं है।**
   - **Nyaya दर्शन में "प्रश्न" का उद्देश्य जिज्ञासा और ज्ञान की प्राप्ति होना चाहिए। यहां प्रश्न केवल विवरणात्मक है।**
2. **प्रश्न की प्रासंगिकता:**
   - **वैदिक दृष्टिकोण में, प्रश्न तात्त्विक और ज्ञानपरक होते हैं। उपनिषदों के संवादों में ब्रह्म, आत्मा, और जगत के स्वरूप के बारे में प्रश्न किए गए हैं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): मूसा से उनकी लाठी के बारे में प्रश्न किया गया।**
- **हेतु (Reason): प्रश्न ज्ञानवर्धक नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): उपनिषदों में पूछे गए प्रश्न तात्त्विक ज्ञान प्राप्त करने के लिए होते हैं।**
- **उपनय (Application): यह प्रश्न Nyaya दर्शन के "प्रश्न" तत्व के उद्देश्य को पूरा नहीं करता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल विवरणात्मक है और इसका कोई तात्त्विक महत्व नहीं है।**

आयत 18

अनुवाद: "अर्ज़ की, यह तो मेरी लाठी है; मैं उस पर सहारा करता हूँ, और इससे अपनी बकरियों पर (और दरख़्तों की) पत्तियाँ झाड़ता हूँ और इसमें मेरे और भी मतलब हैं।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Upamana (Comparison)

विश्लेषण:

1. **लाठी का विवरण:**
    - **मूसा अपनी लाठी के उपयोग का वर्णन करते हैं। यह विवरण कार्यात्मक है, लेकिन इसका दार्शनिक या तात्त्विक महत्व स्पष्ट नहीं है।**
    - **Nyaya दर्शन के "उपमान" (तुलना) सिद्धांत के अनुसार, किसी वस्तु का वर्णन ज्ञानवर्धक होना चाहिए। यहां यह केवल भौतिक उपयोग का वर्णन है।**
2. **तात्त्विक दृष्टिकोण:**
    - **वैदिक साहित्य में वस्तुओं का वर्णन उनकी तात्त्विक प्रकृति के आधार पर किया जाता है। उदाहरण के लिए, गीता (13.2) में शरीर और आत्मा का विश्लेषण तात्त्विक रूप से किया गया है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): मूसा ने लाठी का उपयोग वर्णित किया।**
- **हेतु (Reason): यह विवरण ज्ञानवर्धक नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में वस्तुओं का तात्त्विक विश्लेषण होता है।**
- **उपनय (Application): यह विवरण Nyaya दर्शन के "उपमान" तत्व के उद्देश्य को पूरा नहीं करता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तात्त्विक दृष्टि से अप्रासंगिक है।**

आयत 19

अनुवाद: "फ़रमाया, ऐ मूसा, उसको ज़रा ज़मीन पर डाल तो दो।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Vidhi (Command)

विश्लेषण:

1. **आज्ञा का उद्देश्य:**
    - **मूसा को उनकी लाठी को ज़मीन पर डालने का आदेश दिया गया।**
    - **Nyaya दर्शन के "विधि" तत्व के अनुसार, कोई भी आज्ञा तार्किक और उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए। यहां आज्ञा का उद्देश्य स्पष्ट नहीं है।**
2. **आज्ञा की तर्कसंगतता:**
    - **वैदिक साहित्य में आदेश या निर्देश स्पष्ट उद्देश्य के साथ होते हैं। उदाहरण के लिए, यज्ञ या ध्यान के निर्देश आत्मा और ब्रह्म की प्राप्ति के लिए दिए जाते हैं।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): मूसा को लाठी ज़मीन पर डालने का आदेश दिया गया।**
- **हेतु (Reason): आदेश का उद्देश्य स्पष्ट नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में प्रत्येक विधि तात्त्विक उद्देश्य के लिए होती है।**
- **उपनय (Application): यह आदेश Nyaya दर्शन के "विधि" सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत रूप से अस्वीकार्य है।**

आयत 20

अनुवाद: "मूसा ने उसे डाल दिया, तो फ़ौरन वह साँप बनकर दौड़ने लगा। (यह देखकर मूसा भागे।)"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Proof)

विश्लेषण:

1. **लाठी का साँप बनना:**
    - **यह घटना एक चमत्कार का दावा करती है। लेकिन यह बिना किसी प्रमाण के प्रस्तुत की गई है।**
    - **Nyaya दर्शन के "प्रमाण" सिद्धांत के अनुसार, कोई भी दावा तभी स्वीकार्य है जब वह प्रमाण पर आधारित हो। यहां "लाठी का साँप बनना" तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि से असंभव है।**
2. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

    - **यह घटना प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करती है। वैदिक दर्शन में प्रकृति और ब्रह्म के बीच समरसता पर बल दिया गया है।**

संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): लाठी साँप बन गई।**
- **हेतु (Reason): इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में चमत्कार को आत्मज्ञान और कर्म के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।**
- **उपनय (Application): यह दावा Nyaya दर्शन के "प्रमाण" सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तार्किक और वैज्ञानिक रूप से अस्वीकार्य है।**

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
20:16	Anumana	**धर्म न मानने वालों के प्रति पूर्वाग्रह।**
20:17	Prashna	**प्रश्न का तात्त्विक महत्व नहीं है।**
20:18	Upamana	**लाठी का विवरण ज्ञानवर्धक नहीं है।**
20:19	Vidhi	**आदेश का उद्देश्य स्पष्ट नहीं है।**
20:20	Pramana	**लाठी का साँप बनना अप्रमाणिक है।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत दावे तात्त्विक, तार्किक, और वैज्ञानिक दृष्टि से कमजोर हैं। ये कथाएँ भय, चमत्कार, और धर्म के प्रति पूर्वाग्रह पर आधारित हैं, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांतों और वैदिक दर्शन की तात्त्विकता से मेल नहीं खाते।

आयत 21-24 का विश्लेषण (सूरह ताहा, 20:21-24)

---

1. आयत का विवरण:

अनुवाद (21):
"तो फ़रमाया कि तुम इसको पकड़ लो और डरो नहीं, मैं अभी इसकी पहली सी सूरत फिर किए देता हूँ।"
अनुवाद (22):
"और अपने हाथ को समेट कर अपने बग़ल में तो कर लो (फिर देखो कि) वह बग़ैर किसी बीमारी के सफ़ेद चमकता दमकता हुआ निकलेगा। यह दूसरा मौजिज़ा है।"
अनुवाद (23):
"(ये) ताकि हम तुमको अपनी (कुदरत की) बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखाएँ।"
अनुवाद (24):
"अब तुम फ़िरऔन के पास जाओ, उसने बहुत सर उठाया है।"

---

2. संदर्भ:

यह आयतें मूसा और अल्लाह के संवाद का वर्णन करती हैं, जिसमें अल्लाह ने मूसा को उनके नबी होने का प्रमाण देने के लिए चमत्कारों का प्रदर्शन किया और फिर उन्हें फिरऔन के पास जाकर सत्य का प्रचार करने का आदेश दिया।

---

3. आधारित तत्व (Nyaya Element):

1. **Pramana (प्रमाण): प्रमाण की आवश्यकता; बिना तात्त्विक और वैज्ञानिक प्रमाण के चमत्कारों का दावा।**
2. **Hetu (हेतु): चमत्कारों का कारण और उद्देश्य।**
3. **Tarka (तर्क): चमत्कारों की तार्किकता।**
4. **Vidhi (विधि): आदेश का उद्देश्य और नैतिकता।**

---

4. विश्लेषण:

आयत 21:

"तो फ़रमाया कि तुम इसको पकड़ लो और डरो नहीं, मैं अभी इसकी पहली सी सूरत फिर किए देता हूँ।"

- **विश्लेषण:**
    - **अल्लाह मूसा को एक चमत्कार दिखाते हैं, जिसमें लाठी पहले साँप बनती है और फिर लाठी में बदल जाती है।**
    - **Nyaya दर्शन के "प्रमाण" सिद्धांत के अनुसार, सत्यापित ज्ञान के बिना ऐसा दावा अस्वीकार्य है।**
    - **यह घटना तात्त्विक और प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है। विज्ञान और तर्क की कसौटी पर इसे सिद्ध करना संभव नहीं है।**
- **तर्क:**
    - **चमत्कार का उद्देश्य भय उत्पन्न कर ईश्वर की शक्ति स्थापित करना है, जो नैतिक दृष्टि से उचित नहीं है।**
    - **वैदिक दृष्टिकोण में आत्मज्ञान और कर्म का मार्ग प्रमुख है, न कि चमत्कारों के माध्यम से भय उत्पन्न करना।**

आयत 22:

"और अपने हाथ को समेट कर अपने बग़ल में कर लो (फिर देखो कि) वह बग़ैर किसी बीमारी के सफ़ेद चमकता दमकता हुआ निकलेगा। यह दूसरा मौजिज़ा है।"

- **विश्लेषण:**
    - **यह दूसरा चमत्कार है, जिसमें मूसा का हाथ बिना किसी बीमारी के सफेद चमकता है।**
    - **Nyaya दर्शन के "प्रत्यक्ष" तत्व के अनुसार, किसी भी तथ्य को सत्यापित करने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव या तर्क आवश्यक है। इस चमत्कार का कोई प्रमाणिक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया।**
    - **यह चमत्कार केवल ईश्वर की शक्ति को दिखाने के लिए है, लेकिन इसका कोई व्यावहारिक या नैतिक महत्व नहीं है।**
- **तर्क:**
    - **वैदिक दर्शन में आत्मज्ञान और ब्रह्म की अनुभूति पर बल दिया गया है, न कि चमत्कारों के प्रदर्शन पर।**

  - इस चमत्कार का उद्देश्य केवल ईश्वर के प्रति भय और चमत्कारिक प्रभाव उत्पन्न करना है, जो वैदिक दृष्टिकोण के विरुद्ध है।

आयत 23:

"(ये) ताकि हम तुमको अपनी (कुदरत की) बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखाएँ।"

- **विश्लेषण:**
  - यहाँ यह कहा गया है कि ये चमत्कार अल्लाह की शक्ति और "कुदरत" दिखाने के लिए हैं।
  - Nyaya दर्शन के "उपलब्धि" (Understanding) सिद्धांत के अनुसार, सत्य और ज्ञान को तार्किक रूप से समझाना चाहिए।
  - चमत्कारिक घटनाएँ केवल शक्ति प्रदर्शन हैं, जिनका ज्ञान और तात्त्विक दृष्टि से कोई महत्व नहीं है।
- **तर्क:**
  - ईश्वर की "कुदरत" दिखाने का यह तरीका आत्मज्ञान और धर्म के तात्त्विक सिद्धांतों के अनुकूल नहीं है।
  - वैदिक दृष्टि से, ईश्वर की शक्ति और अस्तित्व को समझने के लिए तर्क, ज्ञान, और आत्म-चिंतन पर बल दिया जाता है।

आयत 24:

"अब तुम फ़िरऔन के पास जाओ, उसने बहुत सर उठाया है।"

- **विश्लेषण:**
  - मूसा को फिरऔन के पास जाने का आदेश दिया गया, क्योंकि वह अहंकारी हो गया था।
  - Nyaya दर्शन के "विधि" (Command) तत्व के अनुसार, आदेश तभी स्वीकार्य है, जब वह नैतिक, तार्किक और आवश्यक हो।
  - फिरऔन के पास जाने का उद्देश्य उसके अहंकार को समाप्त करना था, लेकिन इसे तात्त्विक रूप से स्पष्ट नहीं किया गया।

- **तर्क:**
    - **वैदिक दृष्टि से, अहंकार का नाश ज्ञान और आत्मचिंतन से किया जाता है, न कि चमत्कार और भय के द्वारा।**
    - **आदेश का नैतिक आधार कमजोर है, क्योंकि यह भय और चमत्कारों के माध्यम से धर्म को स्थापित करने का प्रयास है।**

---

5. संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

आयत 21

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): लाठी का साँप से लाठी में बदलना।**
- **हेतु (Reason): यह घटना तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टि से असंभव है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक दर्शन में चमत्कार की बजाय ज्ञान और कर्म पर बल है।**
- **उपनय (Application): यह आयत तात्त्विक और तार्किक दृष्टि से अस्वीकार्य है।**
- **निगमन (Conclusion): चमत्कार केवल भ्रम उत्पन्न करता है।**

आयत 22

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): मूसा का हाथ बिना बीमारी के सफेद चमकता है।**
- **हेतु (Reason): यह घटना प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है।**
- **उदाहरण (Example): गीता** (2.47) **में कर्म और ज्ञान को प्रमुख बताया गया है, न कि चमत्कारों को।**
- **उपनय (Application): यह आयत** Nyaya **दर्शन के "प्रमाण" तत्व के अनुरूप नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह चमत्कार वैज्ञानिक और तात्त्विक रूप से अविश्वसनीय है।**

आयत 23

- **प्रत्याज्ञा (Proposition): चमत्कार अल्लाह की "कुदरत" दिखाने के लिए हैं।**
- **हेतु (Reason): ज्ञान और तर्क के बिना चमत्कार व्यर्थ हैं।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक दर्शन में तर्क और अनुभव के माध्यम से सत्य को समझाया गया है।**
- **उपनय (Application): यह आयत ज्ञान और तात्त्विक दृष्टि से कमजोर है।**
- **निगमन (Conclusion): चमत्कार तात्त्विक सत्य को समझाने में असफल हैं।**

आयत 24

- **प्रत्याज्ञा (Proposition):** मूसा को फिरऔन के पास जाने का आदेश।
- **हेतु (Reason):** आदेश का नैतिक और तार्किक आधार स्पष्ट नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** गीता (16.1-3) में अहंकार का नाश ज्ञान और साधना से करने पर जोर दिया गया है।
- **उपनय (Application):** यह आदेश नैतिक और तात्त्विक दृष्टि से कमजोर है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत वैदिक दृष्टिकोण से उचित नहीं है।

---

6. निष्कर्ष:

1. आयत 21-24 में अल्लाह द्वारा चमत्कारिक घटनाओं का प्रदर्शन और आदेश दिए गए हैं।
2. चमत्कार का उद्देश्य ईश्वर की शक्ति दिखाना है, लेकिन यह तात्त्विक, वैज्ञानिक और नैतिक दृष्टि से कमजोर है।
3. वैदिक दर्शन में ज्ञान, तर्क, और आत्मचिंतन पर बल दिया गया है, जो इन आयतों के चमत्कारिक दृष्टिकोण से मेल नहीं खाता।
4. निष्कर्षतः: ये आयतें तात्त्विक और तार्किक दृष्टि से वैध नहीं हैं।

आयत 25 का विश्लेषण (सूरह ताहा, 20:25)

---

1. आयत का विवरण:

अनुवाद (25):
"मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार (मैं जाता तो हूँ) मगर तू मेरे लिए मेरे सीने को कुशादा फरमा और दिलेर बना।"

---

2. संदर्भ:

यह आयत मूसा की प्रार्थना का वर्णन करती है, जब उन्हें फिरऔन के पास जाने के लिए कहा गया। मूसा अपने आप को नर्वस और भयभीत महसूस करते हैं और वे अल्लाह से अपनी हिम्मत बढ़ाने और सीने को खोला हुआ (अर्थात निडर) बनाने की प्रार्थना करते हैं।

---

3. आधारित तत्व (Nyaya Element):

हम इस आयत का आलोचनात्मक विश्लेषण "Hetu" (Reason - कारण) तत्व के आधार पर करेंगे।

- **Hetu (Reason): यह आयत मूसा के भय और संकोच का कारण स्पष्ट करती है। उनका भय एक मानसिक अवस्था है जो किसी कार्य को करने से पहले अनुभव होती है। वे प्रार्थना करते हैं कि उनका दिल और मस्तिष्क मजबूत हों ताकि वे अपने मिशन में सफल हो सकें।**
- **Prameya (Object of Knowledge): मूसा का विश्वास और ईश्वर से सहायता प्राप्त करने की आवश्यकता, जो एक आंतरिक स्थिति है।**

---

4. विश्लेषण:

आयत 25 का विश्लेषण:

- **"मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार (मैं जाता तो हूँ) मगर तू मेरे लिए मेरे सीने को कुशादा फरमा और दिलेर बना।"**
  - **मूसा यहाँ अपनी मानसिक स्थिति का बयान कर रहे हैं। वे भय और आत्मसंकोच से ग्रसित हैं, और वे ईश्वर से अपनी मानसिक स्थिति को मजबूत करने की प्रार्थना करते हैं।**
  - **Hetu (Reason) के तत्व के अनुसार, यहां मूसा का भय और संकोच एक मानसिक स्थिति है, जिसका कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं है। यह सिर्फ उनकी आंतरिक भावना का परिणाम है।**
  - **इस आयत में कोई ऐसा बाहरी कारण नहीं है, जिसे तर्कसंगत रूप से स्थापित किया गया हो। यह भावनात्मक और व्यक्तिगत संघर्ष को दर्शाता है, जो हर व्यक्ति के जीवन में किसी बड़े कार्य को शुरू करने से पहले हो सकता है।**
  - **Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी कृत्य या स्थिति का तात्त्विक कारण (Hetu) स्पष्ट होना चाहिए। इस आयत में मूसा का भय एक व्यक्तिगत भावना है, जिसे तर्क या प्रमाण के आधार पर स्थापित नहीं किया जा सकता। यह केवल भावनाओं और आंतरिक अनुभवों पर आधारित है।**

आलोचना:

1. **व्यक्तिगत अनुभव की सार्वभौमिकता**:

- मूसा का भय और संकोच उनकी व्यक्तिगत मानसिक स्थिति है, जिसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता। हर व्यक्ति का मानसिक और भावनात्मक अनुभव अलग होता है।
- इस आयत में एक सार्वभौमिक सत्य का दावा नहीं किया गया है, बल्कि यह सिर्फ एक व्यक्ति की व्यक्तिगत प्रार्थना है, जो अन्य लोगों पर लागू नहीं हो सकती।

2. **"Hetu" का अभाव**:
   - इस आयत में तात्त्विक आधार (Hetu) का अभाव है। इस प्रकार की प्रार्थनाएँ और विचार केवल धार्मिक विश्वास और आंतरिक अनुभव पर आधारित हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
   - **Vaisheshika** दर्शन के अनुसार, किसी भी बात का सत्यापन होने के लिए उसे प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित किया जाना चाहिए, जो इस आयत में अनुपस्थित है।
3. **तर्कसंगत असंगति**:
   - यदि हम इसे एक सार्वभौमिक सिद्धांत मानें, तो यह हर व्यक्ति के आत्मविश्वास और मानसिक स्थिति के संघर्ष को बिना तर्क के सार्वभौमिक रूप से स्थापित कर देता है, जो तात्त्विक दृष्टि से ठीक नहीं है।
   - **Sankhya Yoga** में यह विचार है कि आत्मज्ञान और मानसिक शांति केवल व्यक्तिगत अनुभव पर निर्भर नहीं होते, बल्कि उन्हें विवेकपूर्ण दृष्टिकोण से आंतरिक और बाह्य दोनों कारणों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इस आयत में केवल आंतरिक अनुभव पर बल दिया गया है, जो एक तर्कसंगत दृष्टिकोण से असंगत है।

---

5. संरचित तर्क (Nyaya Darshan Structure):

आयत 25 का विश्लेषण:

- **प्रत्याज्ञा (Proposition):** मूसा का भय और संकोच, जो उन्हें अपने मिशन में सफलता पाने में रुकावट डालता है।
- **हेतु (Reason):** मूसा की मानसिक स्थिति और आत्मविश्वास की कमी, जो एक व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है।
- **उदाहरण (Example):** गीता में अर्जुन का भय और संकोच (गीता 2:47), जो एक मानसिक स्थिति है और व्यक्तिगत संघर्ष को दर्शाता है।
- **उपनय (Application):** इस आयत में मूसा की मानसिक स्थिति को दिखाया गया है, लेकिन इसका कोई सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है और न ही तर्कसंगत आधार है।

- **निगमन (Conclusion): यह आयत सार्वभौमिक रूप से मान्य नहीं हो सकती, क्योंकि यह केवल एक व्यक्तिगत मानसिक संघर्ष पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**

---

6. निष्कर्ष:

1. **आध्यात्मिक और मानसिक संघर्ष:**
   आयत में मूसा का व्यक्तिगत संघर्ष और मानसिक स्थिति का वर्णन किया गया है। यह संघर्ष हर व्यक्ति के जीवन में एक सामान्य अनुभव हो सकता है, लेकिन इसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

2. **तर्क और प्रमाण का अभाव:**
   आयत में केवल मूसा की आंतरिक भावना और प्रार्थना को दर्शाया गया है, जिसका कोई बाहरी प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया। इस प्रकार, यह आयत Nyaya दर्शन के Pramana और Hetu सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

3. **आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   Vaisheshika और Sankhya Yoga के दृष्टिकोण से, मानसिक स्थिति का सुधार और आत्मविश्वास केवल आंतरिक प्रार्थनाओं से नहीं होता, बल्कि उसे तर्क, विवेक, और ज्ञान के आधार पर स्थापित किया जाता है। इस आयत में यह दृष्टिकोण अनुपस्थित है।

इस प्रकार, यह आयत सार्वभौमिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि इसमें केवल व्यक्तिगत संघर्ष और आंतरिक अनुभव पर बल दिया गया है, जो हर व्यक्ति पर लागू नहीं हो सकता।

आयत 26 (सूरए ताहा, 20:26)
अनुवाद: "और मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण: यह आयत इस बात की प्रार्थना करती है कि अल्लाह व्यक्ति का काम आसान कर दे। यहाँ पर "Hetu" (कारण) का कोई तात्त्विक और प्रमाणित आधार नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी कार्य का परिणाम (यहाँ काम का आसान होना) उसके कारण (Hetu) पर आधारित होना चाहिए, लेकिन इस आयत में इस कारण का स्पष्ट रूप से वर्णन नहीं किया गया है। यह विश्वास पर आधारित है, जबकि किसी भी परिवर्तन के लिए तात्त्विक कारण का होना आवश्यक होता है।

निष्कर्ष: यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी प्रकार का तात्त्विक कारण प्रस्तुत नहीं किया गया है।

आयत 27 (सूरए ताहा, 20:27)
अनुवाद: "और मेरी ज़बान से लुक़नत की गिरह खोल दे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण: इस आयत में मूसा द्वारा यह प्रार्थना की जा रही है कि उनकी ज़बान में किसी प्रकार की रुकावट न हो, ताकि वह बिना किसी अवरोध के बात कर सकें। यहाँ "प्रमेय" (ज्ञान का विषय) में कोई स्पष्ट तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया है। शारीरिक भाषा या संवाद के लिए किसी दिव्य आशीर्वाद की आवश्यकता का दावा बिना किसी प्रमाण के किया जा रहा है। इस प्रकार का विश्वास मानव अनुभव और तात्त्विक ज्ञान से अलग है, और इसलिए इसका कोई सटीक प्रमाण नहीं दिया जा सकता।

निष्कर्ष: यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी प्रकार का प्रमाणित या तात्त्विक ज्ञान का उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 28 (सूरए ताहा, 20:28)
अनुवाद: "ताकि लोग मेरी बात अच्छी तरह समझें।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण: यह आयत इस बात की उम्मीद करती है कि लोग मूसा की बातों को आसानी से समझ सकेंगे। यहाँ पर "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) का कोई निश्चित और अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया है। इस प्रकार की उम्मीद बिना किसी तात्त्विक और तार्किक आधार के की जा रही है। Nyaya दर्शन के अनुसार, यदि कोई घटना होती है, तो उसका एक निश्चित और प्रमाणित परिणाम होना चाहिए, जो यहाँ स्पष्ट नहीं है। यह केवल एक विश्वास है, जो प्रमाण और तर्क से रहित है।

निष्कर्ष: यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें घटना के परिणाम के लिए कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया है।

आयत 29 (सूरए ताहा, 20:29)
अनुवाद: "और मेरे कुनबे वालो में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बोझ बटाने वाला बना दे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण: इस आयत में मूसा अपने भाई हारून को अपना सहायक बनाने की प्रार्थना करते हैं। यहाँ पर "Hetu" (कारण) की अनुपस्थिति महसूस होती है। यह प्रार्थना केवल एक इच्छा या अनुरोध है, जिसमें किसी तात्त्विक कारण का संकेत नहीं मिलता। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी स्थिति के परिवर्तन के लिए तात्त्विक कारण (Hetu) का होना अनिवार्य है, जो यहाँ अनुपस्थित है।

निष्कर्ष: यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी कारण का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 30 (सूरए ताहा, 20:30)
अनुवाद: "को मेरा वज़ीर बोझ बटाने वाला बना दे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण: यह आयत भी एक अनुरोध है, जिसमें मूसा अपने भाई हारून से बोझ को हल्का करने की प्रार्थना करते हैं। यहाँ पर भी "Hetu" (कारण) का कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। किसी भी व्यक्ति या कार्य के बोझ को हल्का करने का कारण स्पष्ट और प्रमाणित नहीं किया गया है। यह एक दिव्य कृपा पर आधारित विश्वास है, जो तात्त्विक दृष्टि से खड़ा नहीं होता।

निष्कर्ष: यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें बोझ को हल्का करने का कोई प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

सारांश

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	Hetu	**किसी काम को आसान करने का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया।**
27	Prameya	**ज़बान की गिरह खोलने का कोई प्रमाणित या तात्त्विक ज्ञान नहीं दिया**

		गया।
28	Vyapti	**बातचीत को समझने के लिए कोई निश्चित और अनिवार्य संबंध नहीं है।**
29	Hetu	**हारून को सहायक बनाने का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया।**
30	Hetu	**बोझ को हल्का करने का कोई प्रमाणित कारण नहीं दिया गया।**

इस प्रकार, इन आयतों में जो धार्मिक आदेश दिए गए हैं, वे केवल विश्वास और इच्छाओं पर आधारित हैं, जबकि Nyaya दर्शन के तर्कसंगत सिद्धांतों में इनका कोई प्रमाण या आधार नहीं है।

आयत 31 (सूरए ताहा, 20:31)
अनुवाद: "उसके ज़रिए से मेरी पुश्त मज़बूत कर दे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत मूसा की प्रार्थना का हिस्सा है, जिसमें वह अल्लाह से अपनी पुश्त (वंश) को मजबूत करने के लिए कह रहे हैं। यह "Hetu" (कारण) का सिद्धांत स्पष्ट रूप से अनुपस्थित है। यहाँ पर यह दावा किया जा रहा है कि भाई हारून की मदद से मूसा की वंशवृद्धि मजबूत हो जाएगी, लेकिन इसका कोई तात्त्विक कारण या प्रमाण नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन में किसी भी घटना के लिए प्रमाण और तात्त्विक कारण का होना जरूरी होता है। इस आयत में कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या तात्त्विक कारण प्रस्तुत नहीं किया गया है।

आयत 32 (सूरए ताहा, 20:32)
अनुवाद: "और मेरे काम में उसको मेरा शरीक बना।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
इस आयत में मूसा अल्लाह से यह प्रार्थना करते हैं कि उनके भाई हारून को उनका शरीक (सहयोगी) बना दे। इस प्रार्थना में "Hetu" (कारण) का कोई तात्त्विक आधार नहीं है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी कार्य में

किसी को सहयोगी बनाने का कारण स्पष्ट और तात्त्विक होना चाहिए। यहाँ पर यह प्रार्थना केवल एक धार्मिक आग्रह है, जिसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक कारण नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी तात्त्विक कारण का उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 33 (सूरए ताहा, 20:33)
अनुवाद: "ताकि हम दोनों (मिलकर) कसरत से तेरी तसबीह करें।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
इस आयत में मूसा और हारून की मिलकर अल्लाह की तसबीह करने की प्रार्थना की जा रही है। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी क्रिया का निश्चित और प्रमाणित परिणाम होना चाहिए, लेकिन यहाँ पर केवल एक इच्छा व्यक्त की जा रही है, जिसका कोई प्रमाणित परिणाम नहीं दिया गया है। यह केवल विश्वास और धार्मिक आग्रह पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Vyapti" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी भी क्रिया के परिणाम का कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं है।

आयत 34 (सूरए ताहा, 20:34)
अनुवाद: "और कसरत से तेरी याद करें।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत भी मूसा और हारून से कसरत से अल्लाह की याद करने की प्रार्थना करती है। यहाँ पर भी "Vyapti" का सिद्धांत लागू होता है, क्योंकि किसी क्रिया (यहाँ अल्लाह की याद करने) का निश्चित और अनिवार्य परिणाम होना चाहिए, जो यहाँ स्पष्ट नहीं है। केवल एक धार्मिक प्रार्थना है, लेकिन इस क्रिया का तात्त्विक परिणाम नहीं दिखाया गया है।

निष्कर्ष:
यह आयत भी "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई अनिवार्य संबंध या प्रमाणित परिणाम नहीं है।

आयत 35 (सूरए ताहा, 20:35)
अनुवाद: "तू तो हमारी हालत देख ही रहा है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत मूसा की प्रार्थना का अंतिम भाग है, जिसमें वह अल्लाह से कहते हैं कि वह उनकी स्थिति को देख रहे हैं। "Pramana" (प्रमाणित ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया गया है कि अल्लाह उनकी स्थिति देख रहे हैं, लेकिन इसका कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन में, किसी भी ज्ञान का प्रमाणीकरण आवश्यक होता है, और यहाँ केवल विश्वास और धार्मिक धारणाएँ हैं, जिनका कोई प्रमाणित आधार नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित और तात्त्विक ज्ञान का उल्लेख नहीं किया गया है।

सारांश

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	Hetu	**पुश्त को मजबूत करने का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया।**
32	Hetu	**हारून को शरीक बनाने का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया।**
33	Vyapti	**कसरत से तसबीह करने के परिणाम का कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं है।**
34	Vyapti	**अल्लाह की याद करने के परिणाम का कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं है।**

35	Pramana	**अल्लाह द्वारा देखी जा रही स्थिति का कोई प्रमाणित आधार नहीं है।**

इन आयतों में जो प्रार्थनाएँ की जा रही हैं, वे धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और Nyaya दर्शन के तात्त्विक और प्रमाणिक सिद्धांतों से मेल नहीं खातीं। इन प्रार्थनाओं के लिए कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक कारण नहीं प्रस्तुत किया गया है, जिससे ये आयतें प्रमाणित और तात्त्विक दृष्टि से अप्रासंगिक बन जाती हैं।

आयत 36 (सूरए ताहा, 20:36)
अनुवाद: "फ़रमाया ऐ मूसा तुम्हारी सब दरख़्वास्तें मंज़ूर की गई।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत मूसा की प्रार्थनाओं की स्वीकृति को दर्शाती है, लेकिन इसमें "Hetu" (कारण) का कोई स्पष्ट तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी कृत्य या घटना का विश्लेषण तर्क और प्रमाण के आधार पर होना चाहिए, और यहां यह स्वीकृति केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है। प्रार्थना की स्वीकृति का कारण स्पष्ट नहीं है, जो इसे तात्त्विक दृष्टि से कमजोर बनाता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई तात्त्विक कारण या प्रमाण नहीं दिया गया है।

आयत 37 (सूरए ताहा, 20:37)
अनुवाद: "और हम तो तुम पर एक बार और एहसान कर चुके हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत यह दावा करती है कि अल्लाह ने मूसा पर एक बार और एहसान किया है, लेकिन इसका कोई प्रमाणित आधार नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन में, किसी भी दावे को प्रमाणित और सत्य ज्ञान के आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इस आयत में केवल विश्वास का उल्लेख किया गया है, जबकि इसका कोई सत्य या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Pramana" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित ज्ञान का उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 38 (सूरए ताहा, 20:38)
अनुवाद: "जब हमने तुम्हारी माँ को इलहाम किया जो अब तुम्हें "वही" के ज़रिए से बताया जाता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत दावा करती है कि अल्लाह ने मूसा की माँ को "इलहाम" (प्रेरणा) दी, लेकिन इस "इलहाम" का कोई प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी ज्ञान का प्रमाणीकरण आवश्यक है। केवल विश्वास या धार्मिक अनुभव पर आधारित ज्ञान का कोई प्रमाण नहीं होता, जो इसे तात्त्विक दृष्टि से अप्रासंगिक बनाता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Pramana" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित और सत्य ज्ञान का उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 39 (सूरए ताहा, 20:39)
अनुवाद: "तुम इसे (मूसा को) सन्दूक़ में रखकर सन्दूक़ को दरिया में डाल दो फिर दरिया उसे ढकेल कर किनारे डाल देगा कि मूसा को मेरा दुशमन और मूसा का दुशमन (फिरऔन) उठा लेगा और मैंने तुम पर अपनी मोहब्बत को डाल दिया जो देखता (प्यार करता) ताकि तुम मेरी ख़ास निगरानी में पाले पोसे जाओ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
इस आयत में यह दावा किया गया है कि मूसा को एक सन्दूक़ में डालकर दरिया में फेंक दिया जाएगा और फिर वह मूसा के दुश्मन के पास जाएगा। Nyaya दर्शन के "Vyapti" सिद्धांत के अनुसार, हर घटना का एक निश्चित और अनिवार्य परिणाम होना चाहिए। लेकिन यहाँ पर कोई स्पष्ट और प्रमाणित संबंध नहीं है, जिससे यह दावा तात्त्विक रूप से मजबूत नहीं है। यह केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई निश्चित और अनिवार्य परिणाम नहीं दिखाया गया है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Vyapti" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी घटना के परिणाम के लिए कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया है।

आयत 40 (सूरए ताहा, 20:40)
अनुवाद: "(उस वक़्त) जब तुम्हारी बहन चली (और फिर उनके घर में आकर) कहने लगी कि कहो तो मैं तुम्हें ऐसी दाया बताऊँ कि जो इसे अच्छी तरह पाले तो (इस तदबीर से) हमने फिर तुमको तुम्हारी माँ के पास पहुँचा दिया ताकि उसकी आँखें ठन्डी रहें और तुम्हारी (जुदाई पर) कुढ़े नहीं और तुमने एक शख़्स (ख़बती) को मार डाला था और सख़्त परेशान थे तो हमने तुमको (इस) ग़म से नजात दी और हमने तुम्हारा अच्छी तरह इम्तिहान कर लिया फिर तुम कई बरस तक मदीने के लोगों में जाकर रहे ऐ मूसा फिर तुम (उम्र के) एक अन्दाज़े पर आ गए नबूवत के क़ायल हुए।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत मूसा के जीवन के विभिन्न घटनाक्रमों का उल्लेख करती है, जैसे उनकी माँ के पास वापसी, ग़म से नजात, और इम्तिहान। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना या कार्य के लिए कारण का स्पष्ट और तात्त्विक आधार होना चाहिए। यहाँ पर केवल घटनाओं का विवरण दिया गया है, लेकिन इन घटनाओं के कारण का कोई तात्त्विक या प्रमाणित आधार नहीं बताया गया। यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें घटनाओं के लिए कोई प्रमाणित और तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।

सारांश

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	Hetu	**प्रार्थनाओं के मंज़ूरी का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया।**
37	Pramana	**एहसान का दावा बिना प्रमाणित आधार के किया गया है।**

38	Pramana	**इलहाम का दावा बिना प्रमाणित ज्ञान के किया गया है।**
39	Vyapti	**मूसा को सन्दूक़ में डालने की घटना का कोई अनिवार्य परिणाम नहीं दिखाया गया है।**
40	Hetu	**घटनाओं के कारण का कोई तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है।**

इन आयतों में जो घटनाएँ और प्रार्थनाएँ वर्णित हैं, वे Nyaya दर्शन के तात्त्विक सिद्धांतों के ख़िलाफ हैं। इनमें प्रमाण और तर्क की कमी है, जो इन आयतों को प्रमाणित और तात्त्विक दृष्टि से अप्रासंगिक बनाता है।

आयत 41 (सूरए ताहा, 20:41)
अनुवाद: "और मैंने तुमको अपनी रिसालत के वास्ते मुन्तख़ब किया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत यह दावा करती है कि अल्लाह ने मूसा को अपनी रिसालत के लिए चुना। हालांकि, यह दावा केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसका कोई तात्त्विक या प्रमाणित आधार नहीं प्रस्तुत किया गया। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी ज्ञान का प्रमाणीकरण आवश्यक है। यहां कोई प्रमाणित या सत्य ज्ञान का उल्लेख नहीं है, जो इसे तात्त्विक दृष्टि से कमजोर बनाता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Pramana" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित ज्ञान या सत्य का उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 42 (सूरए ताहा, 20:42)
अनुवाद: "तुम अपने भाई समैत हमारे मौजिज़े लेकर जाओ और (देखो) मेरी याद में सुस्ती न करना।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत मूसा और उनके भाई हारून को मौजिज़े (चमत्कारी चिन्ह) लेकर फ़िरऔन के पास भेजने का आदेश देती है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी आदेश या कार्य के पीछे तात्त्विक कारण का होना आवश्यक है। यहाँ पर मौजिज़ों के उपयोग का कोई स्पष्ट और प्रमाणित कारण नहीं बताया गया। यह केवल विश्वास पर आधारित है, जबकि प्रमाण और तर्क का होना आवश्यक है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि मौजिज़ों के उपयोग का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।

आयत 43 (सूरए ताहा, 20:43)
अनुवाद: "तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ बेशक वह बहुत सरकश हो गया है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत फ़िरऔन की सरकशी (अवज्ञा) के बारे में बताती है, लेकिन "प्रमेय" (ज्ञान का वस्तु) का कोई स्पष्ट तात्त्विक आधार नहीं है। सरकशी का दावा केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जबकि Nyaya दर्शन में किसी भी ज्ञान का प्रमाणित या तात्त्विक आधार होना चाहिए। यह दावा बिना प्रमाण के किया गया है, जो इसे तात्त्विक दृष्टि से कमजोर बनाता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Prameya" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या सत्य ज्ञान का उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 44 (सूरए ताहा, 20:44)
अनुवाद: "फिर उससे (जाकर) नरमी से बातें करो ताकि वह नसीहत मान ले या डर जाए।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत मूसा और हारून को फ़िरऔन से नरमी से बात करने का निर्देश देती है, ताकि वह नसीहत मान ले या डर जाए। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी कार्य या रणनीति का स्पष्ट और तात्त्विक कारण होना चाहिए। यहाँ नरमी से बात करने के आदेश का कोई तात्त्विक या प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है, जिससे यह केवल विश्वास पर आधारित होता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें नरमी से बात करने के आदेश का कोई प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

आयत 45 (सूरए ताहा, 20:45)
अनुवाद: "दोनों ने अर्ज़ की ऐ हमारे पालने वाले हम डरते हैं कि कहीं वह हम पर ज़्यादती (न) कर बैठे या और ज़्यादा सरकशी कर ले।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत मूसा और हारून के डर को दर्शाती है कि फ़िरऔन उन पर ज़्यादती न कर दे या अधिक सरकशी न कर ले। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी डर या चिंता का एक प्रमाणित कारण होना चाहिए। यहाँ पर उनका डर केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया पर आधारित है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या प्रमाणित कारण नहीं दिया गया। यह धार्मिक विश्वास और भावनाओं पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टि से कमजोर बनता है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें डर का कोई तात्त्विक और प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

सारांश

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41	Pramana	**रिसालत के चयन का कोई प्रमाणित आधार नहीं दिया गया।**
42	Hetu	**मौजिज़ों का उपयोग बिना तात्त्विक कारण के किया गया।**
43	Prameya	**फ़िरऔन की सरकशी का दावा बिना प्रमाणित आधार के किया गया।**
44	Hetu	**नरमी से बातें करने के आदेश का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया।**
45	Hetu	**डर का कोई प्रमाणित कारण नहीं दिया गया।**

इन आयतों में जो आदेश और घटनाएँ वर्णित हैं, वे Nyaya दर्शन के तात्त्विक सिद्धांतों के खिलाफ हैं। इनमें प्रमाण और तर्क की कमी है, जो इन्हें प्रमाणित और तात्त्विक दृष्टि से अप्रासंगिक बना देता है।

आयत 46 (सूरए ताहा, 20:46)
अनुवाद: "फ़रमाया तुम डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ (सब कुछ) सुनता और देखता हूँ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत अल्लाह की ओर से मूसा और हारून को आश्वासन देती है कि वे डरें नहीं, क्योंकि अल्लाह उनके साथ है और सब कुछ सुनता और देखता है। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी आश्वासन का तात्त्विक और प्रमाणित कारण होना चाहिए। यहाँ पर अल्लाह के अस्तित्व और उसकी सहायता के दावे को बिना किसी तात्त्विक प्रमाण या कारण के प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार, यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो वैज्ञानिक या तार्किक रूप से प्रमाणित नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें अल्लाह की सहायता का कोई तात्त्विक कारण या प्रमाण नहीं दिया गया है।

आयत 47 (सूरए ताहा, 20:47)
अनुवाद: "ग़रज़ तुम दोनों उसके पास जाओ और कहो कि हम आप के परवरदिगार के रसूल हैं तो बनी इसराइल को हमारे साथ भेज दीजिए और उन्हें सताइए नहीं हम आपके पास आपके परवरदिगार का मौजिज़ा लेकर आए हैं और जो राहे रास्त की पैरवी करे उसी के लिए सलामती है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत मूसा और हारून को फ़िरऔन के पास भेजने का आदेश देती है और कहती है कि वे उसे यह बताएं कि वे अल्लाह के रसूल हैं और उनके पास अल्लाह का मौजिज़ा है। Nyaya दर्शन के "Pramana" (प्रमाणित ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी दावा या संदेश का प्रमाणित आधार होना चाहिए। यहाँ, यह दावा किया जा रहा है कि मूसा और हारून के पास मौजिज़ा है, लेकिन इसका कोई प्रमाणित या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Pramana" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें मौजिज़े का कोई प्रमाणित आधार नहीं दिया गया है।

आयत 48 (सूरए ताहा, 20:48)
अनुवाद: "हमारे पास ख़ुदा की तरफ से ये "वही" नाज़िल हुई है कि यक़ीनन अज़ाब उसी शख़्स पर है जो (ख़ुदा की आयतों को) झुठलाए और उसके हुक्म से मुँह मोड़े।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि जो लोग अल्लाह की आयतों को झुठलाएंगे और उसके आदेशों से मुंह मोड़ेंगे, उन पर अज़ाब (दंड) आएगा। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना के परिणाम का एक निश्चित और अनिवार्य संबंध होना चाहिए। यहाँ, यह दावा किया जा रहा है कि झूठलाने और मुँह मोड़ने से अज़ाब का आना निश्चित है, लेकिन इस संबंध को स्पष्ट रूप से प्रमाणित नहीं किया गया है। यह केवल विश्वास पर आधारित है, जबकि इस संबंध का तार्किक और प्रमाणित आधार होना चाहिए।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Vyapti" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें झूठलाने और अज़ाब के बीच कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया है।

आयत 49 (सूरए ताहा, 20:49)
अनुवाद: "(ग़रज़ गए और कहा) फ़िरऔन ने पूछा ऐ मूसा आख़िर तुम दोनों का परवरदिगार कौन है?"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत फ़िरऔन के मूसा और हारून से उनके परवरदिगार (ईश्वर) के बारे में पूछने की स्थिति को बताती है। Nyaya दर्शन में, किसी भी ज्ञान का प्रमेयर (वस्तु) का सत्य और प्रमाणित होना आवश्यक है। यहाँ पर फ़िरऔन द्वारा पूछा गया सवाल "तुम दोनों का परवरदिगार कौन है?" का कोई तात्त्विक और प्रमाणित उत्तर नहीं दिया गया। केवल विश्वास के आधार पर अल्लाह का अस्तित्व स्थापित किया जा रहा है, जबकि इसका कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Prameya" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें परवरदिगार का ज्ञान बिना प्रमाणित आधार के दिया गया है।

आयत 50 (सूरए ताहा, 20:50)
अनुवाद: "मूसा ने कहा हमारा परवरदिगार वह है जिसने हर चीज़ को उसके (मुनासिब) सूरत अता फरमाई फिर उसी ने ज़िन्दगी बसर करने के तरीक़े बताए।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत मूसा द्वारा फ़िरऔन को उनके परवरदिगार का वर्णन करने का एक प्रयास है। मूसा के अनुसार, परवरदिगार वही है जिसने सभी चीजों को उसकी उचित सूरत दी और जीवन जीने के तरीके बताए। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी व्याख्या का प्रमाणित और तात्त्विक कारण होना चाहिए। यहाँ पर जीवन के तरीकों को परवरदिगार के कार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जीवन के तरीकों के पीछे कोई प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

सारांश

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	Hetu	**अल्लाह के साथ होने का दावा बिना प्रमाणित कारण के।**
47	Pramana	**मौजिज़े का दावा बिना प्रमाणित आधार के।**
48	Vyapti	**अज़ाब और झूठलाने के बीच अनिवार्य संबंध का कोई प्रमाण नहीं।**
49	Prameya	**परवरदिगार का ज्ञान बिना प्रमाणित आधार के दिया गया।**
50	Hetu	**जीवन जीने के तरीकों का कोई प्रमाणित कारण नहीं दिया गया।**

इन आयतों में जो दावे किए गए हैं, वे Nyaya दर्शन के तात्त्विक सिद्धांतों के खिलाफ हैं। इनमें प्रमाण और तर्क की कमी है, जो इन्हें तात्त्विक दृष्टि से अप्रासंगिक बना देता है।

आयत 51 (सूरए ताहा, 20:51)
अनुवाद: "फ़रऔन ने पूछा भला अगले लोगों का हाल (तो बताओ) कि क्या हुआ?"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत फ़िरऔन द्वारा मूसा से पूछे गए सवाल को दर्शाती है कि आगे की क़ौमों का क्या हाल हुआ। इस सवाल का उद्देश्य आगामी लोगों की किस्मत और उनकी नसीहत को जानना था। Nyaya दर्शन के "Prameya" (वस्तु का ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी वस्तु का ज्ञान विश्वसनीय और प्रमाणित होना चाहिए। फ़िरऔन का सवाल जोकि भविष्य या अतीत के बारे में था, उसका प्रमाणिक और सटीक उत्तर देने का दावा यहां किया जा रहा है, लेकिन इसमें कोई तात्त्विक या प्रमाणित जानकारी नहीं दी जा रही है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Prameya" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दावे किए गए हैं जिनका प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं दिखाया गया है।

आयत 52 (सूरए ताहा, 20:52)
अनुवाद: "मूसा ने कहा इन बातों का इल्म मेरे परवरदिगार के पास एक किताब (लौहे महफ़ूज़) में (लिखा हुआ) है मेरा परवरदिगार न बहकता है न भूलता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत मूसा का जवाब है जिसमें वह कहते हैं कि अगले लोगों का हाल उनके परवरदिगार के पास एक किताब (लौहे महफ़ूज़) में लिखा हुआ है। यह दावा किया जा रहा है कि यह ज्ञान अल्लाह के पास सुरक्षित है। Nyaya दर्शन के "Pramana" (प्रमाणित ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी ज्ञान का प्रमाणित और सत्य होना आवश्यक है। यहाँ पर यह दावा किया जा रहा है कि यह ज्ञान किताब में लिखा हुआ है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। यह दावा विश्वास पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Pramana" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ज्ञान का प्रमाणित आधार नहीं दिया गया है।

आयत 53 (सूरए ताहा, 20:53)
अनुवाद: "वह वही है जिसने तुम्हारे (फ़ायदे के) वास्ते ज़मीन को बिछौना बनाया और तुम्हारे लिए उसमें राहें निकाली और उसी ने आसमान से पानी बरसाया फिर (ख़ुदा फरमाता है कि) हम ही ने उस पानी के ज़रिए से मुख़्तलिफ़ क़िस्मों की घासे निकाली।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत यह बताती है कि अल्लाह ने पृथ्वी को बिछौना और रास्ते बनाए, और आकाश से पानी बरसाया ताकि जीवन के लिए घास पैदा हो। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) सिद्धांत के अनुसार, किसी भी प्रक्रिया का एक उचित कारण और तात्त्विक व्याख्या होनी चाहिए। यहाँ पर यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह ने ये सभी कार्य किए हैं, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या प्रमाणित कारण नहीं दिया गया। यह पूरी तरह से विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कार्यों का कोई तात्त्विक कारण या वैज्ञानिक आधार नहीं दिखाया गया है।

आयत 54 (सूरए ताहा, 20:54)
अनुवाद: "(ताकि) तुम ख़ुद भी खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ कुछ शक नहीं कि इसमें अक़्लमन्दों के वास्ते (कुदरते ख़ुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत यह बताती है कि जो अल्लाह ने पृथ्वी पर उत्पन्न किया, वह इंसान और जानवर दोनों के लिए फायदेमंद है। इसमें यह कहा गया है कि इसमें अल्लाह की कुदरत की निशानियाँ हैं। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना या परिणाम के बीच एक निश्चित और अनिवार्य संबंध होना चाहिए। यहाँ पर यह दावा किया जा रहा है कि पृथ्वी और उसकी उत्पत्ति के कारण अक्लमन्दों के लिए निशानियाँ हैं, लेकिन इसका कोई अनिवार्य और प्रमाणित संबंध नहीं दिखाया गया। यह केवल विश्वास पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Vyapti" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें पृथ्वी और उसकी कुदरत के बीच कोई अनिवार्य और प्रमाणित संबंध नहीं दिखाया गया है।

आयत 55 (सूरए ताहा, 20:55)
अनुवाद: "हमने इसी ज़मीन से तुम को पैदा किया और (मरने के बाद) इसमें लौटा कर लाएँगे और उसी से दूसरी बार (क़यामत के दिन) तुमको निकाल खड़ा करेंगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत यह बताती है कि अल्लाह ने इंसान को पृथ्वी से उत्पन्न किया और मृत्यु के बाद उसे उसी में लौटा देंगे, और फिर क़यामत के दिन पुनः उसे बाहर निकालेंगे। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना का एक प्रमाणित कारण होना चाहिए। यहाँ पर यह दावा किया जा रहा है कि मृत्यु के बाद पुनः जीवन होगा, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या प्रमाणित कारण नहीं प्रस्तुत किया गया है। यह केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत Nyaya दर्शन के "Hetu" सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जीवन और मृत्यु के चक्र का कोई प्रमाणित कारण या तात्त्विक व्याख्या नहीं दी गई है।

सारांश

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
51	Prameya	**भविष्य या अतीत के घटनाओं का ज्ञान बिना प्रमाणित आधार के।**
52	Pramana	**किताब में लिखे ज्ञान का कोई प्रमाणित आधार नहीं।**
53	Hetu	**पृथ्वी और आकाश से पानी के संबंध का कोई तात्त्विक कारण नहीं।**
54	Vyapti	**पृथ्वी और उत्पत्ति के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया।**
55	Hetu	**पुनः जीवन और क़यामत का कोई प्रमाणित कारण नहीं दिखाया गया।**

इन आयतों में दिए गए दावे Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते, क्योंकि इनमें तात्त्विक कारण, प्रमाण या तार्किक आधार की कमी है।

आयत 56-60 (सूरए आराफ़, 7:56-60)

आयत 56 (सूरए आराफ़, 7:56)
अनुवाद: "और मैंने फ़िरऔन को अपनी सारी निशानियाँ दिखा दी इस पर भी उसने सबको झुठला दिया और न माना।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)
विश्लेषण:

- **यहाँ पर कहा गया है कि फ़िरऔन ने अल्लाह की निशानियों को झूठा कर दिया। यह दावा "प्रमेय" (ज्ञान का वस्तु) से संबंधित है, लेकिन इसमें किसी भी प्रकार का प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है कि ये निशानियाँ वास्तव में सत्य थीं।**
- **Nyaya दर्शन में, किसी भी वस्तु (यहाँ अल्लाह की निशानियाँ) का प्रमाणित होना आवश्यक है। यह आयत केवल एक विश्वास पर आधारित है, जिसमें कोई प्रमाणित ज्ञान नहीं प्रस्तुत किया गया है।**
  निष्कर्ष:
  यह आयत "प्रमेय" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या तात्त्विक ज्ञान का अभाव है।

आयत 57 (सूरए आराफ़, 7:57)
अनुवाद: "कहने लगा ऐ मूसा क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम को हमारे मुल्क (मिस्र से) अपने जादू के ज़ोर से निकाल बाहर करो?"
आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)
विश्लेषण:

- **यहाँ पर फ़िरऔन मूसा से यह सवाल कर रहा है कि क्या वह उसे और उसके लोग को जादू के ज़ोर से निकालने के लिए आया है। इस आयत में "Hetu" (कारण) का सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है, लेकिन फ़िरऔन के प्रश्न का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।**
- **Nyaya दर्शन के अनुसार, हर आरोप का एक स्पष्ट कारण होना चाहिए। यहाँ पर कोई तार्किक कारण नहीं दिया गया कि क्यों फ़िरऔन यह मानता है कि मूसा उसे जादू से बाहर करना चाहता है। यह विचार पूरी तरह से बिना प्रमाण के है।**
  निष्कर्ष:

यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई स्पष्ट और प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

आयत 58 (सूरए आराफ़, 7:58)
अनुवाद: "अच्छा तो (रहो) हम भी तुम्हारे सामने ऐसा जादू पेश करते हैं फिर तुम अपने और हमारे दरमियान एक वक़्त मुक़र्रर करो कि न हम उसके ख़िलाफ करे और न तुम और मुक़ाबला एक साफ़ खुले मैदान में हो।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): **Vyapti (Invariable Concomitance)**
विश्लेषण:

- यहाँ पर फ़िरऔन यह कह रहा है कि वह भी मूसा के सामने जादू पेश करेगा और फिर दोनों के बीच एक समय तय होगा। "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना का परिणाम अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ होना चाहिए, लेकिन यहाँ पर जादू की शक्ति और उसके परिणामों का कोई अनिवार्य और तात्त्विक संबंध नहीं प्रस्तुत किया गया है।
- यह पूरी घटना तात्त्विक और प्रमाणिक दृष्टिकोण से अस्पष्ट है, और Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का स्पष्ट और अनिवार्य परिणाम होना चाहिए, जो इस आयत में नहीं दिख रहा।
निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें घटना का कोई निश्चित और अनिवार्य परिणाम नहीं दिया गया है।

आयत 59 (सूरए आराफ़, 7:59)
अनुवाद: "मूसा ने कहा तुम्हारे (मुक़ाबले) की मीयाद ज़ीनत (ईद) का दिन है और उस रोज़ सब लोग दिन चढ़े जमा किए जाँए।"
आधारित तत्व (Nyaya Element): **Pramana (Valid Knowledge)**
विश्लेषण:

- यहाँ मूसा कह रहे हैं कि एक तय समय (ईद का दिन) पर दोनों के बीच मुकाबला होगा। "Pramana" (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, इस प्रकार के निर्णय का प्रमाण होना चाहिए, जो कि इस आयत में अनुपस्थित है।
- ईद का दिन केवल एक धार्मिक समय है, जो विशुद्ध रूप से विश्वास पर आधारित है, लेकिन यहाँ इसे एक "सत्य" या "प्रमाणित ज्ञान" के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

निष्कर्ष:

यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी सत्य या प्रमाणित ज्ञान का अभाव है।

आयत 60 (सूरए आराफ़, 7:60)

अनुवाद: "उसके बाद फ़िरऔन (अपनी जगह) लौट गया फिर अपने चलत्तर (जादू के सामान) जमा करने लगा फिर (मुक़ाबले को) आ मौजूद हुआ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): **Hetu (Reason)**

विश्लेषण:

- **यहाँ पर फ़िरऔन जादू के सामान इकट्ठा कर रहा है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया कि क्यों वह यह कदम उठा रहा है। "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, हर कृत्य का एक स्पष्ट और प्रमाणित कारण होना चाहिए, लेकिन यहाँ पर कोई स्पष्ट कारण नहीं है कि क्यों फ़िरऔन को यह कदम उठाना पड़ा।**
- **यह पूरी प्रक्रिया विश्वास और धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है, जबकि Nyaya दर्शन के अनुसार किसी भी कार्रवाई का वैज्ञानिक और तात्त्विक आधार होना चाहिए।**

  निष्कर्ष:

  यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई स्पष्ट और प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
आयत 56	प्रमेय	कोई प्रमाणित या तात्त्विक ज्ञान का अभाव है।
आयत 57	हेतू	कोई स्पष्ट कारण नहीं दिया गया कि फ़िरऔन को ऐसा क्यों करना पड़ा।
आयत 58	व्याप्ति	जादू का कोई अनिवार्य परिणाम नहीं दिया गया है।
आयत 59	प्रमाण	कोई सत्य या प्रमाणित ज्ञान नहीं प्रस्तुत किया गया।
आयत 60	हेतू	कोई स्पष्ट कारण नहीं दिया गया कि फ़िरऔन ने जादू के सामान इकट्ठा

किया।

इन आयतों में दिए गए धार्मिक विश्वासों और घटनाओं में तात्त्विक और प्रमाणित ज्ञान का अभाव है, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार अप्रासंगिक हैं। इन आयतों में किसी भी कृत्य या घटना का विश्लेषण तर्क और प्रमाण के आधार पर नहीं किया गया है, जिससे ये आयतें तात्त्विक दृष्टिकोण से गलत साबित होती हैं।

आयत 61 (सूरए आराफ़, 7:61)

अनुवादः "मूसा ने (फ़िरऔनयो से) कहा तुम्हारा नास हो ख़ुदा पर झूठी-झूठी इफ़्तेरा पर्वाज़ियाँ न करो वरना वह अज़ाब (नाज़िल करके) इससे तुम्हारा मलया मेट कर छोड़ेगा और (याद रखो कि) जिसने इफ़्तेरा पर्वाज़ियाँ की वह यकीनन नामुराद रहा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

- **प्रमाण का अभावः इस आयत में मूसा का यह कथन कि "जो इफ़्तेरा पर्वाज़ियाँ करेगा, वह नामुराद होगा" बिना किसी प्रमाण या वैज्ञानिक आधार के किया गया है। Nyaya दर्शन में, किसी भी निष्कर्ष को प्रमाणित या प्रमाणिकता के आधार पर स्वीकार किया जाता है, लेकिन इस आयत में कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है।**
- **तर्कहीन आरोपः इस आयत में झूठे आरोपों का स्पष्ट रूप से प्रतिकार किया गया है, लेकिन इसका तात्त्विक आधार अनुपस्थित है। यह केवल विश्वास और धार्मिक दावे पर निर्भर है।**

निष्कर्ष: यह आयत "प्रमाण" (Valid Knowledge) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी वैज्ञानिक या प्रमाणित ज्ञान का अभाव है।

आयत 62 (सूरए आराफ़, 7:62)

अनुवादः "इस पर वह लोग अपने काम में बाहम झगड़ने और सरगोशियाँ करने लगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **आधारहीन झगड़ा: आयत में यह कहा गया है कि फ़िरऔन के लोग आपस में झगड़ने और सरगोशियाँ करने लगे। इस व्यवहार के पीछे कोई ठोस कारण (Hetu) नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन में, किसी भी घटना या व्यवहार का एक स्पष्ट कारण होना चाहिए। यहाँ पर, इन झगड़ों का कारण अस्पष्ट है और केवल घटना का वर्णन किया गया है, जो तात्त्विक दृष्टि से अप्रासंगिक है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी व्यवहार के कारण का स्पष्ट विवरण नहीं है।

आयत 63 (सूरए आराफ़, 7:63)

अनुवाद: "(आख़िर) वह लोग बोल उठे कि ये दोनों यक़ीनन जादूगर हैं और चाहते हैं कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुम लोगों को तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करें और तुम्हारे अच्छे ख़ासे मज़हब को मिटा छोड़ें।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **संदेहास्पद आरोप: इस आयत में मूसा और हारून पर जादूगर होने का आरोप लगाया गया है, जो बिना किसी प्रमाण या तात्त्विक आधार के किया गया है। Nyaya दर्शन में, किसी भी आरोप को प्रमाणित या प्रमेय (Object of Knowledge) के आधार पर किया जाना चाहिए, लेकिन यहाँ पर ऐसा कोई प्रमाण नहीं दिया गया है। यह केवल एक आरोप है, जो वास्तविकता के खिलाफ हो सकता है।**
- **वैज्ञानिक असंगति: जादू की शक्तियों के दावे और आरोप बिना किसी ठोस प्रमाण के किए जाते हैं, जो कि Nyaya दर्शन के अनुसार अवैज्ञानिक और अव्यावहारिक है।**

निष्कर्ष: यह आयत "प्रमेय" (Object of Knowledge) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें आरोपों का कोई प्रमाण या वास्तविक आधार नहीं दिया गया है।

आयत 64 (सूरए आराफ़, 7:64)

अनुवाद: "तो तुम भी ख़ूब अपने चलत्तर (जादू वग़ैरह) दुरूस्त कर लो फिर परा (सफ़) बाँध के (उनके मुक़ाबले में) आ पड़ो और जो आज डर रहा हो वही फायज़ुल मराम रहा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- **जादू और सफलता का अनिवार्य संबंध: इस आयत में जादू के माध्यम से सफलता की उम्मीद जताई गई है, जो कि Nyaya दर्शन के "व्याप्ति" (Vyapti) सिद्धांत के खिलाफ है। "व्याप्ति" का मतलब है कि किसी घटना का परिणाम एक निश्चित और अनिवार्य होना चाहिए। यहाँ पर, जादू के माध्यम से सफलता की कोई निश्चित और तात्त्विक अनिवार्यता नहीं है। जादू केवल एक विश्वास है, इसका कोई वैज्ञानिक या प्रमाणित आधार नहीं है।**
- **प्राकृतिक नियमों के खिलाफ: जादू के प्रभाव को एक निश्चित और अपरिवर्तनीय परिणाम के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असंगत है।**

निष्कर्ष: यह आयत "व्याप्ति" (Vyapti) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी घटना के परिणाम का कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं है।

आयत 65 (सूरए आराफ़, 7:65)

अनुवाद: "ग़रज़ जादूगरों ने कहा (ऐ मूसा) या तो तुम ही (अपने जादू) फेंको और या ये कि पहले जो जादू फेंके वह हम ही हों।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **जादू के असर का प्रमाण नहीं: आयत में जादू के ज़ोर से कुछ करने का सुझाव दिया गया है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक कारण (Hetu) नहीं बताया गया है। Nyaya दर्शन में, किसी भी घटना या कार्य के लिए तर्क और प्रमाणित कारण आवश्यक होते हैं। जादू केवल एक अवैज्ञानिक विश्वास है, जो इस आयत में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसके असर या कारण का कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कार्यों के कारण का कोई तात्त्विक विवरण नहीं है।

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
61	प्रमाण (Pramana)	कोई वैज्ञानिक या प्रमाणित ज्ञान का अभाव
62	कारण (Hetu)	झगड़ों का कोई ठोस कारण नहीं दिया गया
63	प्रमेय (Prameya)	आरोपों का कोई प्रमाण नहीं है
64	व्याप्ति (Vyapti)	जादू का प्रभाव अनिवार्य और प्रमाणिक नहीं है
65	कारण (Hetu)	जादू के असर का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया

इन आयतों में जो दावे किए गए हैं, वे प्रमाण और तर्क की दृष्टि से अप्रमाणित हैं। Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, किसी भी विचार या घटना को तात्त्विक और प्रमाणिक आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।

आयत 66 (सूरए आराफ़, 7:66)

अनुवाद: "मूसा ने कहा (मैं नहीं डालूँगा) बल्कि तुम ही पहले डालो (ग़रज़ उन्होंने अपने करतब दिखाए) तो बस मूसा को उनके जादू (के ज़ोर से) ऐसा मालूम हुआ कि उनकी रस्सियाँ और उनकी छड़ियाँ दौड़ रही हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **झूठी वास्तविकता का निर्माण (False Realization): आयत में कहा गया है कि मूसा को जादू के ज़ोर से यह महसूस हुआ कि रस्सियाँ और छड़ियाँ दौड़ रही हैं। इस दृश्य को वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि यह केवल जादू का असर था, जिसे तात्त्विक दृष्टि से प्रमाणित या यथार्थ नहीं माना जा सकता।**
- **प्रमेय का भ्रम (Confusion of Object of Knowledge): Nyaya दर्शन में, प्रमेय (Object of Knowledge) को स्पष्ट और प्रमाणित किया जाता है। यहाँ, मूसा को एक भ्रम उत्पन्न हुआ है, जो कि तर्क और प्रमाण से मेल नहीं खाता है। यह केवल विश्वास और काल्पनिक दृश्य हैं, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य नहीं हैं।**

निष्कर्ष: यह आयत "प्रमेय" (Object of Knowledge) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह दृश्य वास्तविकता से परे और प्रमाणित नहीं है।

आयत 67 (सूरए आराफ़, 7:67)

अनुवाद: "तो मूसा ने अपने दिल में कुछ दहशत सी पाई।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **भावनाओं का आधारहीन डर (Emotion Without Valid Reason): आयत में मूसा को जादू के असर से डर लगने का वर्णन है, लेकिन इसके लिए कोई ठोस कारण (Hetu) नहीं बताया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना या भावना का एक स्पष्ट और प्रमाणिक कारण होना चाहिए। यहाँ मूसा का डर केवल एक भावनात्मक प्रतिक्रिया है, जिसका कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।**
- **अवास्तविक डर (Unfounded Fear): इस डर को तात्त्विक रूप से व्याख्यायित करना मुश्किल है, क्योंकि यह जादू के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ है, जो स्वयं प्रमाणित नहीं है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें भावनाओं के उत्पन्न होने का कोई ठोस और प्रमाणित कारण नहीं है।

आयत 68 (सूरए आराफ़, 7:68)

अनुवाद: "हमने कहा (मूसा) इस से डरो नहीं यक़ीनन तुम ही वर रहोगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

- **आध्यात्मिक आश्वासन (Spiritual Assurance): आयत में मूसा को आध्यात्मिक रूप से डरे बिना आगे बढ़ने की सलाह दी जा रही है। यह सलाह केवल विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई ठोस**

वैज्ञानिक या प्रमाणित आधार नहीं है। Nyaya दर्शन में, किसी भी ज्ञान या विश्वास को प्रमाणित और सत्य के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है।

- **सत्यापन का अभाव (Lack of Verification): इस आयत में मूसा को जो आश्वासन दिया गया है, वह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और इसमें कोई प्रमाणित ज्ञान नहीं है। इससे कोई तात्त्विक निष्कर्ष नहीं निकलता।**

निष्कर्ष: यह आयत "प्रमाण" (Valid Knowledge) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित सत्य या ज्ञान का उल्लेख नहीं किया गया है।

आयत 69 (सूरए आराफ़, 7:69)

अनुवाद: "और तुम्हारे दाहिने हाथ में जो (लाठी) है उसे डाल तो दो कि जो करतब उन लोगों ने की है उसे हड़प कर जाए क्योंकि उन लोगों ने जो कुछ करतब की वह एक जादूगर की करतब है और जादूगर जहाँ जाए कामयाब नहीं हो सकता (ग़रज़ मूसा की लाठी ने) सब हड़प कर लिया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- **अलौकिक शक्तियाँ और उनका परिणाम (Supernatural Powers and Their Outcome): यहाँ मूसा की लाठी को जादू के करतबों को हड़पने के रूप में प्रस्तुत किया गया है। Nyaya दर्शन के "व्याप्ति" (Vyapti) सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का परिणाम एक निश्चित और अपरिवर्तनीय होना चाहिए, जो यहाँ पर स्पष्ट नहीं है। लाठी के द्वारा जादू को हड़पने का दावा केवल विश्वास और अवैज्ञानिक तत्वों पर आधारित है, जिसका कोई प्रमाण नहीं है।**
- **अनिवार्य परिणाम का अभाव (Lack of Invariable Concomitance): जादू की दुनिया में कोई निश्चित और वैज्ञानिक परिणाम नहीं होता, जैसा कि इस आयत में प्रस्तुत किया गया है। इसे व्यावहारिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझाना असंभव है।**

निष्कर्ष: यह आयत "व्याप्ति" (Vyapti) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी घटना के परिणाम का कोई स्पष्ट और अनिवार्य संबंध नहीं है।

आयत 70 (सूरए आराफ़, 7:70)

अनुवाद: "वह सब जादूगर सजदे में गिर पड़े (और कहने लगे) कि हम मूसा और हारून के परवरदिगार पर ईमान ले आए।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **आध्यात्मिक परिवर्तन का कारण (Spiritual Transformation and its Reason): इस आयत में यह कहा गया है कि जादूगर मूसा और हारून के परवरदिगार पर ईमान ले आए। यह आध्यात्मिक परिवर्तन केवल जादू के परिणामस्वरूप हुआ बताया गया है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या प्रमाणित कारण (Hetu) नहीं दिया गया है। Nyaya दर्शन में किसी भी बदलाव या परिवर्तन का एक स्पष्ट और प्रमाणिक कारण होना चाहिए, जो यहाँ अनुपस्थित है।**
- **अविश्वसनीय परिवर्तन (Unbelievable Transformation): यह परिवर्तन केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से स्वीकार्य नहीं है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी आध्यात्मिक परिवर्तन का प्रमाणित कारण नहीं है।

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
66	**प्रमेय (Prameya)**	**जादू का प्रभाव वास्तविकता से परे और प्रमाणित नहीं है।**
67	**कारण (Hetu)**	**डर का कोई ठोस और प्रमाणित कारण नहीं है।**
68	**प्रमाण (Pramana)**	**आध्यात्मिक आश्वासन बिना किसी प्रमाणित ज्ञान के दिया गया है।**
69	**व्याप्ति (Vyapti)**	**जादू का प्रभाव अनिवार्य और प्रमाणिक नहीं है।**
70	**कारण (Hetu)**	**आध्यात्मिक परिवर्तन का कोई तात्त्विक कारण नहीं है।**

इन आयतों में जो घटनाएँ और बदलाव प्रस्तुत किए गए हैं, वे केवल विश्वास और अवैज्ञानिक तत्वों पर आधारित हैं। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना या बदलाव को प्रमाण और तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।

आयत 71 (सूरए आराफ़, 7:71)

अनुवाद: "फ़िरऔन ने उन लोगों से कहा (हाए) इससे पहले कि हम तुमको इजाज़त दें तुम उस पर ईमान ले आए, इसमें शक नहीं कि ये तुम सबका बड़ा (गुरू) है जिसने तुमको जादू सिखाया है, तो मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव ज़रूर काट डालूँगा और तुम्हें ख़ुरमों की शाख़ों पर सूली चढ़ा दूँगा और उस वक़्त तुमको (अच्छी तरह) मालूम हो जाएगा कि हम (दोनों) फरीक़ों से अज़ाब में ज़्यादा बढ़ा हुआ कौन और किसको क़याम ज़्यादा है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **अत्याचार का कारण (Reason for Oppression): फ़िरऔन का दावा है कि मूसा और हारून के ईमान लाने की वजह से उन्हें सजा दी जाएगी, जिसे उसने जादू सिखाने के आरोप के तहत प्रस्तुत किया। यह एक अवैज्ञानिक और प्रमाणहीन आरोप है, क्योंकि उसे किसी भी ठोस और प्रमाणिक कारण से यह साबित नहीं किया गया है कि वे जादू सिखा रहे हैं। Nyaya दर्शन में, किसी भी दंड या सजा का कारण प्रमाणित होना चाहिए।**
- **शक्ति का दुरुपयोग (Abuse of Power): फ़िरऔन का यह प्रस्ताव केवल अपने सत्ता के दुरुपयोग का प्रतीक है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से गलत है। Nyaya दर्शन में शक्ति का उपयोग न्यायपूर्ण और उचित कारणों के आधार पर होना चाहिए, न कि व्यक्तिगत नफरत या भ्रम के कारण।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें अत्याचार और सजा के लिए कोई प्रमाणित और न्यायपूर्ण कारण नहीं दिया गया है।

आयत 72 (सूरए आराफ़, 7:72)

अनुवाद: "जादूगर बोले कि ऐसे वाज़ेए व रौशन मौजिज़ात जो हमारे सामने आए उन पर और जिस (ख़ुदा) ने हमको पैदा किया उस पर तो हम तुमको किसी तरह तरजीह नहीं दे सकते, तो जो तुझे करना हो कर गुज़र तू बस दुनिया की (इसी ज़रा)सी ज़िन्दगी पर हुकूमत कर सकता है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

- **अविश्वसनीय दावा (Unbelievable Claim): जादूगरों का कहना है कि वे ईश्वर और उसकी तात्त्विक शक्तियों पर विश्वास करते हैं और फ़िरऔन के आदेशों को तात्त्विक दृष्टिकोण से अस्वीकार करते हैं। यह मान्यता केवल आध्यात्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है। Nyaya दर्शन में किसी भी ज्ञान को प्रमाणित और सत्य के आधार पर स्वीकार किया जाता है।**
- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव (Lack of Scientific Approach): यहाँ, जादूगरों द्वारा ईश्वर पर विश्वास करना केवल धार्मिक दृष्टिकोण है, जिसे व्यावहारिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष: यह आयत "प्रमाण" (Valid Knowledge) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह केवल विश्वास और आध्यात्मिक दावे पर आधारित है, बिना किसी वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार के।

आयत 73 (सूरए आराफ़, 7:73)

अनुवादः "(और कहा) हम तो अपने परवरदिगार पर इसलिए ईमान लाए हैं ताकि हमारे वास्ते सारे गुनाह माफ़ कर दे और (ख़ास कर) जिस पर तूने हमें मजबूर किया था और ख़ुदा ही सबसे बेहतर है और (उसी को) सबसे ज़्यादा क़याम है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **आध्यात्मिक उद्धार का दावा (Claim of Spiritual Salvation): आयत में यह कहा गया है कि जादूगर ईश्वर पर विश्वास करते हैं ताकि उनके गुनाह माफ़ हो जाएं। यह दावा केवल आध्यात्मिक विश्वासों पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। Nyaya दर्शन में प्रमेय (Object of Knowledge) को वैज्ञानिक और प्रमाणिक होना चाहिए, जो यहाँ अनुपस्थित है।**
- **सत्य का अभाव (Lack of Truth): यह दावा करता है कि ईश्वर ही सबका उद्धारकर्ता है, जो केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन यह सत्य या प्रमाण से मेल नहीं खाता है।**

निष्कर्ष: यह आयत "प्रमेय" (Object of Knowledge) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी आध्यात्मिक या धार्मिक विश्वास का प्रमाण नहीं है।

आयत 74 (सूरए आराफ़, 7:74)

अनुवाद: "इसमें शक नहीं कि जो शख़्स मुजरिम होकर अपने परवरदिगार के सामने हाजिर होगा तो उसके लिए यक़ीनन जहन्नुम (धरा हुआ) है जिसमें न तो वह मरे ही गा और न ज़िन्दा ही रहेगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- **निश्चित परिणाम का दावा (Claim of Invariable Consequence): यहाँ पर यह दावा किया गया है कि यदि कोई अपराधी ईश्वर के सामने जाएगा, तो उसे निश्चित रूप से जहन्नुम मिलेगा। यह एक निश्चित और अपरिवर्तनीय परिणाम का दावा है, लेकिन Nyaya दर्शन में किसी भी घटना का परिणाम केवल प्रमाण और तर्क पर आधारित होना चाहिए, न कि मात्र विश्वास और आध्यात्मिक अवधारणाओं पर।**
- **वैज्ञानिक प्रमाण का अभाव (Lack of Scientific Evidence): इस आयत में जो परिणाम बताया गया है, वह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसका कोई प्रमाणित या वैज्ञानिक आधार नहीं है। Nyaya दर्शन में प्रमाणित सिद्धांतों को ही सत्य माना जाता है।**

निष्कर्ष: यह आयत "व्याप्ति" (Vyapti) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी निश्चित और वैज्ञानिक परिणाम का प्रमाण नहीं दिया गया है।

आयत 75 (सूरए आराफ़, 7:75)

अनुवाद: "(सिसकता रहेगा) और जो शख़्स उसके सामने ईमानदार हो कर हाज़िर होगा और उसने अच्छे-अच्छे काम भी किए होंगे तो ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए बड़े-बड़े बुलन्द रूतबे हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

- **आध्यात्मिक पुरस्कार का दावा (Claim of Spiritual Reward): इस आयत में यह दावा किया गया है कि ईमानदार लोग और अच्छे कार्य करने वाले लोग बड़े-बड़े रूतबे प्राप्त करेंगे। यह दावा केवल आध्यात्मिक या धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई प्रमाण या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

- **सत्यापन का अभाव (Lack of Verification)**: Nyaya दर्शन में किसी भी ज्ञान को सत्यापन और प्रमाण के आधार पर स्वीकार किया जाता है। यह दावा केवल धार्मिक विश्वास है, जो व्यावहारिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं है।

निष्कर्ष: यह आयत "प्रमाण" (Valid Knowledge) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह केवल आध्यात्मिक विश्वासों पर आधारित है, जो प्रमाणित नहीं हैं।

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
71	कारण (Hetu)	अत्याचार और सजा के लिए कोई प्रमाणित और न्यायपूर्ण कारण नहीं है।
72	प्रमाण (Pramana)	आध्यात्मिक विश्वास पर आधारित दावा, जिसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।
73	प्रमेय (Prameya)	आध्यात्मिक उद्धार का दावा प्रमाणित नहीं है।
74	व्याप्ति (Vyapti)	निश्चित और अपरिवर्तनीय परिणाम का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।
75	प्रमाण (Pramana)	आध्यात्मिक पुरस्कार का दावा केवल विश्वास पर आधारित है।

इन आयतों में जो घटनाएँ और परिवर्तन प्रस्तुत किए गए हैं, वे केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और इनका कोई प्रमाणित या वैज्ञानिक आधार नहीं है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे या घटना को प्रमाण और सत्य के आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।

आयत 76 (सूरए आराफ़, 7:76)

अनुवाद: "वह सदाबहार बाग़ात जिनके नीचे नहरें जारी हैं वह लोग उसमें हमेशा रहेंगे और जो गुनाह से पाक व पाकीज़ा रहे, उसका यही सिला है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **आध्यात्मिक पुरस्कार का दावा (Claim of Spiritual Reward): इस आयत में यह कहा गया है कि गुनाह से पाक व्यक्ति को सदाबहार बाग़ातों में स्थायी निवास मिलेगा। यह दावा आध्यात्मिक विश्वासों पर आधारित है और Nyaya दर्शन में केवल प्रमाणित और प्रमाणिक दावे ही सत्य माने जाते हैं।**
- **तर्कसंगत कमी (Logical Shortcoming): इस आयत का तात्त्विक मूल्यांकन करते हुए हम यह देख सकते हैं कि यह दावा प्रमाणित नहीं है, क्योंकि इसे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखा गया है। Nyaya के अनुसार, किसी भी घटना या परिणाम को प्रमाण और तर्क के आधार पर समझा जाना चाहिए, जबकि यहां केवल विश्वास का उल्लेख है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसका दावा प्रमाणित कारणों पर आधारित नहीं है और केवल आध्यात्मिक विश्वासों पर आधारित है।

आयत 77 (सूरए आराफ़, 7:77)

अनुवाद: "और हमने मूसा के पास 'वही' भेजी कि मेरे बन्दों (बनी इसराइल) को (मिस्र से) रातों रात निकाल ले जाओ फिर दरिया में (लाठी मारकर) उनके लिए एक सूखी राह निकालो और तुमको पीछा करने का न कोई खौ़फ़ रहेगा न (डूबने की) कोई दहशत।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:

- **प्रमाणित घटना का अभाव (Lack of Verifiable Event): आयत में यह दावा किया गया है कि मूसा ने अपनी लाठी से दरिया में एक सूखी राह बनाई और बनी इसराइल को सुरक्षित रूप से निकाल लिया। यह दावा ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं है और केवल धार्मिक कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। Nyaya दर्शन में किसी भी घटना का सत्यापन प्रमाण और तर्क पर आधारित होता है, जबकि यहाँ इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **अविश्वसनीय दावा (Unverifiable Claim): यह घटना केवल धार्मिक कथा के रूप में प्रस्तुत की गई है, जिसका कोई वैज्ञानिक या भौतिक आधार नहीं है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का सत्यापन प्रमाणित तरीके से होना चाहिए।**

निष्कर्ष: यह आयत "प्रमाण" (Valid Knowledge) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह केवल धार्मिक कथा पर आधारित है और इसका कोई प्रमाण नहीं है।

आयत 78 (सूरए आराफ़, 7:78)

अनुवाद: "ग़ारज़ फ़िरऔन ने अपने लशकर समैत उनका पीछा किया फिर दरिया (के पानी का रेला) जैसा कुछ उन पर छाया गया वह छा गया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:

- **निश्चित परिणाम का दावा (Claim of Invariable Consequence): यहाँ पर यह दावा किया गया है कि फ़िरऔन और उसके लश्कर को दरिया में डूबने का निश्चित परिणाम हुआ। यह दावा एक निश्चित और अपरिवर्तनीय परिणाम का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन Nyaya दर्शन में किसी भी घटना का परिणाम केवल प्रमाण और तर्क पर आधारित होना चाहिए। यहाँ यह दावा केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसे प्रमाणित करना कठिन है।**
- **तर्क का अभाव (Lack of Reasoning): इस घटना का कोई प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है, केवल एक निश्चित परिणाम का उल्लेख किया गया है। Nyaya दर्शन में इस तरह के दावों को वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार पर प्रमाणित किया जाना चाहिए।**

निष्कर्ष: यह आयत "व्याप्ति" (Vyapti) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी निश्चित और वैज्ञानिक परिणाम का प्रमाण नहीं दिया गया है।

आयत 79 (सूरए आराफ़, 7:79)

अनुवाद: "और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह (करके हलाक) कर डाला और उनकी हिदायत न की।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **विफलता का कारण (Cause of Failure):** इस आयत में कहा गया है कि फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह कर दिया और उनकी हिदायत नहीं की। यह एक ऐतिहासिक टिप्पणी है, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का कारण और परिणाम तर्क और प्रमाण पर आधारित होना चाहिए।
- **किसी कारण का प्रमाण नहीं (No Proof for the Cause):** यह आयत केवल दावा करती है कि फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है। Nyaya में किसी भी कार्रवाई के पीछे तर्क और प्रमाणित कारण होना चाहिए।

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी घटना का प्रमाणित कारण नहीं दिया गया है।

आयत 80 (सूरए आराफ़, 7:80)

अनुवाद: "ऐ बनी इसराइल हमने तुमको तुम्हारे दुश्मन (के पंजे) से छुड़ाया और तुम से (कोहेतूर) के दाहिने तरफ का वायदा किया और हम ही ने तुम पर मन व सलवा नाज़िल किया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **आध्यात्मिक और भौतिक दावे (Spiritual and Physical Claims):** इस आयत में दावा किया गया है कि ईश्वर ने बनी इसराइल को उनके दुश्मनों से बचाया और उन्हें मन व सलवा दिया। यह दावा आध्यात्मिक और भौतिक दोनों दृष्टिकोणों से किया गया है, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार, प्रमेय (Object of Knowledge) केवल प्रमाणित और प्रमाणिक आधार पर स्वीकार किया जाता है। यह दावा केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।
- **वैज्ञानिक प्रमाणीकरण का अभाव (Lack of Scientific Verification):** इस आयत में जो घटनाएँ प्रस्तुत की गई हैं, उनका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। Nyaya दर्शन में, प्रमेय को प्रमाण और सत्य के आधार पर स्वीकार किया जाता है, जबकि यह केवल विश्वास पर आधारित है।

निष्कर्ष: यह आयत "प्रमेय" (Object of Knowledge) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी घटनाओं का प्रमाणित या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया है।

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
76	कारण (Hetu)	आध्यात्मिक पुरस्कार का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।
77	प्रमाण (Pramana)	धार्मिक कथा का दावा, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
78	व्याप्ति (Vyapti)	निश्चित परिणाम का दावा बिना प्रमाण और तर्क के किया गया है।
79	कारण (Hetu)	गुमराही का दावा बिना प्रमाणित कारण के किया गया है।
80	प्रमेय (Prameya)	आध्यात्मिक दावे, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

इन आयतों में प्रस्तुत की गई घटनाएँ और दावे केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और इनका कोई प्रमाण या वैज्ञानिक आधार नहीं है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना या दावे को प्रमाण और तर्क के आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

आयत 81 (सूरए आराफ़, 7:81)

अनुवाद: "और (फ़रमाया) कि हमने जो पाक व पाक़ीज़ा रोज़ी तुम्हें दे रखी है उसमें से खाओ (पियो) और उसमें (किसी क़िस्म की) शरारत न करो वरना तुम पर मेरा अज़ाब नाज़िल हो जाएगा और (याद रखो कि) जिस पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो वह यक़ीनन गुमराह (हलाक) हुआ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **खानपान में शरारत से अज़ाब (Punishment for Mischief in Food): आयत में यह कहा गया है कि यदि लोग पाक और पाकीज़ा रोज़ी का सेवन करते हुए शरारत करेंगे, तो उन पर ईश्वर का अज़ाब नाजिल होगा। यह दावा एक स्पष्ट चेतावनी है, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का कारण तर्क और प्रमाण के आधार पर होना चाहिए। यहाँ पर "शरारत" के बारे में कोई स्पष्ट तर्क नहीं दिया गया है कि यह क्यों ईश्वर के ग़ज़ब का कारण बनती है।**
- **शास्त्रों में शरारत की व्याख्या का अभाव (Lack of Explanation for Mischief): इस आयत में "शरारत" शब्द का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन Nyaya दर्शन में किसी भी शास्त्र में दिए गए शब्दों**

का स्पष्ट और संक्षिप्त अर्थ होना चाहिए। "शरारत" का क्या अर्थ है, इसे स्पष्ट नहीं किया गया है, जिससे इस पर आधारित तर्क कमजोर होता है।

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दी गई चेतावनी बिना किसी स्पष्ट कारण या तर्क के है, जो Nyaya दर्शन में अव्याख्यायित और कमजोर है।

आयत 82 (सूरए आराफ़, 7:82)

अनुवाद: "और जो शख़्स तौबा करे और ईमान लाए और अच्छे काम करे फिर साबित क़दम रहे तो हम उसको ज़रूर बख़्शने वाले हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) और Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **तौबा और ईमान का संबंध (Relationship of Repentance and Faith)**: इस आयत में यह दावा किया गया है कि जो व्यक्ति तौबा करता है, ईमान लाता है और अच्छे कर्म करता है, उसे ईश्वर माफ कर देगा। यह आध्यात्मिक दृष्टिकोण से उचित प्रतीत होता है, लेकिन Nyaya दर्शन में यह माना जाता है कि किसी भी दावे को प्रमाण और तर्क से समर्थित होना चाहिए। इस आयत में "बख्शने" की प्रक्रिया के बारे में कोई तर्क नहीं दिया गया है, केवल धार्मिक विश्वास का उल्लेख किया गया है।
- **सिद्धांत की कमजोरी (Weakness of the Doctrine)**: Nyaya के सिद्धांतों के अनुसार, किसी भी आध्यात्मिक प्रक्रिया का प्रमाणित आधार और तर्क होना चाहिए, लेकिन यहाँ पर यह केवल धार्मिक विश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) और "प्रमेय" (Object of Knowledge) के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती, क्योंकि यहाँ दी गई प्रक्रिया और परिणाम का कोई प्रमाण और तर्क नहीं दिया गया है।

आयत 83 (सूरए आराफ़, 7:83)

अनुवाद: "फिर जब मूसा सत्तर आदमियों को लेकर चले और ख़ुद आगे बढ़ आए तो हमने कहा कि (ऐ मूसा तुमने अपनी क़ौम से आगे चलने में क्यों जल्दी की)?"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **अचानक आगे बढ़ने का कारण (Reason for Moving Ahead): इस आयत में मूसा से पूछा गया कि वे अपने क़ौम से आगे क्यों बढ़े। यह सवाल किया गया है, लेकिन इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं दिया गया। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी कार्य या घटना के पीछे स्पष्ट और प्रमाणित कारण होना चाहिए। यहाँ पर केवल सवाल किया गया है, लेकिन इसका कोई ठोस कारण नहीं दिया गया।**
- **तर्क का अभाव (Lack of Reasoning): आयत में मूसा की जल्दी करने की वजह का कोई तर्क नहीं दिया गया है। इससे इस आयत की स्पष्टता और तर्कसंगतता पर सवाल उठता है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई ठोस तर्क और कारण नहीं दिया गया है।

आयत 84 (सूरए आराफ़, 7:84)

अनुवाद: "अर्ज़ की वह भी तो मेरे ही पीछे चले आ रहे हैं और इसी लिए मैं जल्दी करके तेरे पास इसलिए आगे बढ़ आया हूँ ताकि तू (मुझसे) ख़ुश रहे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **मूसा का तर्क (Moses' Reasoning): यहाँ मूसा अपने जल्दी आगे बढ़ने का कारण बताते हैं कि वे चाहते थे कि ईश्वर खुश रहे। हालांकि, यह तर्क आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समझ में आता है, लेकिन Nyaya दर्शन में किसी भी कार्य का कारण प्रमाणित और वैज्ञानिक आधार पर आधारित होना चाहिए। यहाँ, मूसा का तर्क धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**
- **तर्क की स्पष्टता का अभाव (Lack of Clarity in Reasoning): इस आयत में दी गई वजह अस्पष्ट है और केवल मूसा के व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। Nyaya दर्शन में किसी भी कार्रवाई के पीछे दी गई वजह को स्पष्ट और तर्कसंगत होना चाहिए।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें तर्क की स्पष्टता और प्रमाण का अभाव है।

आयत 85 (सूरए आराफ़, 7:85)

अनुवाद: "फ़रमाया तो हमने तुम्हारे (आने के बाद) तुम्हारी क़ौम का इम्तिहान लिया और सामरी ने उनको गुमराह कर छोड़ा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **सामरी का गुमराही का कारण (Cause of Samaritan's Deception): यहाँ यह दावा किया गया है कि मूसा के बाद उनकी क़ौम का इम्तिहान लिया गया और सामरी ने उन्हें गुमराह कर दिया। हालांकि, यह दावा एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का कारण और परिणाम तर्क और प्रमाण के आधार पर होना चाहिए। "गुमराह करना" एक अमूर्त प्रक्रिया है जिसका कोई ठोस कारण नहीं दिया गया है।**
- **तर्क का अभाव (Lack of Reasoning): इस आयत में "गुमराह" करने का कारण और प्रक्रिया स्पष्ट नहीं की गई है। Nyaya दर्शन में इस तरह के दावों के लिए स्पष्ट तर्क और प्रमाण की आवश्यकता होती है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" (Reason) के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें गुमराही के कारण और प्रक्रिया का कोई प्रमाणित तर्क नहीं दिया गया है।

सारांश:

आयत संख्या	**चुना गया तत्व**	**मुख्य आलोचना**
81	**कारण (Hetu)**	**शरारत का स्पष्ट तात्विक कारण नहीं दिया गया।**
82	**कारण (Hetu) और प्रमेय (Prameya)**	**तौबा और ईमान का सिद्धांत बिना प्रमाण और तर्क के प्रस्तुत किया गया।**
83	**कारण (Hetu)**	**जल्दी बढ़ने का कारण स्पष्ट नहीं है।**
84	**कारण (Hetu)**	**मूसा का तर्क स्पष्ट और प्रमाणित नहीं है।**
85	**कारण (Hetu)**	**सामरी का गुमराह करने का कारण स्पष्ट नहीं है।**

इन आयतों में प्रस्तुत किए गए दावे तात्त्विक और प्रमाणित तर्क पर आधारित नहीं हैं, जिससे ये Nyaya दर्शन के दृष्टिकोण से कमजोर होते हैं।

आयत 86 (सूरए आराफ़, 7:86)

अनुवाद: "तो मूसा गुस्से में भरे पछताए हुए अपनी क़ौम की तरफ पलटे और आकर कहने लगे ऐ मेरी (कमबक़्त) क़ौम क्या तुमसे तुम्हारे परवरदिगार ने एक अच्छा वायदा (तौरेत देने का) न किया था तुम्हारे वायदे में अरसा लग गया या तुमने ये चाहा कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार का ग़ज़ब टूंट पड़े कि तुमने मेरे वायदे (ख़ुदा की परसतिश) के ख़िलाफ किया।"

आधारित तत्व **(Nyaya Element)**: Hetu (Reason) और Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- मूसा का गुस्सा और पछतावा **(Moses' Anger and Regret)**: मूसा इस आयत में अपनी क़ौम से गुस्से में आकर सवाल करते हैं कि उन्होंने ईश्वर के वायदे को क्यों तोड़ा। यहाँ पर मूसा का तर्क गुस्से में है, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी भी व्यक्ति का तर्क शांति और सोच-समझ पर आधारित होना चाहिए, न कि केवल गुस्से पर। यह तर्क केवल भावनाओं पर आधारित होने से इसका तात्त्विक मूल्य कमजोर है।
- वायदे का उल्लंघन **(Violation of Promise)**: मूसा का आरोप है कि उनकी क़ौम ने वायदे का उल्लंघन किया। यह दावा बिना किसी प्रमाण के है कि क़ौम ने वायदा तोड़ा है। Nyaya दर्शन में किसी भी तर्क या आरोप को प्रमाण और तर्क के आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जो इस आयत में नहीं है।

निष्कर्ष: इस आयत में मूसा का तर्क गुस्से और भावनाओं पर आधारित है, जो Nyaya दर्शन में उचित नहीं माना जाता। इस प्रकार, यह आयत "हेतु" और "प्रमेय" के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें आरोप बिना किसी ठोस प्रमाण के हैं।

आयत 87 (सूरए आराफ़, 7:87)

अनुवाद: "वह लोग कहने लगे हमने आपके वायदे के ख़िलाफ नहीं किया बल्कि (बात ये हुई कि फ़िरऔन की) क़ौम के ज़ेवर के बोझे जो (मिस्र से निकलते वक़्त) हम पर लद गए थे उनको हम लोगों ने (सामरी के कहने से आग में) डाल दिया फिर सामरी ने भी डाल दिया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **सामरी का प्रभाव (Influence of Samaritan): क़ौम का कहना है कि सामरी के कहने पर उन्होंने ज़ेवरों को आग में डाला और फिर सामरी ने बछड़े की मूरत बनाई। यह तर्क केवल सामरी के प्रभाव पर आधारित है, लेकिन Nyaya दर्शन में यह सवाल उठता है कि क्या सामरी का प्रभाव इतना शक्तिशाली था कि उन्होंने पूरी क़ौम को भ्रमित कर दिया? इसका कोई ठोस तर्क नहीं दिया गया।**
- **तर्क की कमी (Lack of Reasoning): इस आयत में दी गई प्रक्रिया को तर्कसंगत ढंग से स्पष्ट नहीं किया गया। यह केवल एक घटना का वर्णन है, जिसमें कोई कारण और परिणाम की तार्किक कड़ी नहीं दी गई है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दी गई प्रक्रिया का कोई ठोस प्रमाण और तर्क नहीं है। यह केवल एक घटना का विवरण है, जो Nyaya के दृष्टिकोण से कमजोर है।

आयत 88 (सूरए आराफ़, 7:88)

अनुवाद: "फिर सामरी ने उन लोगों के लिए (उसी ज़ेवर से) एक बछड़े की मूरत बनाई जिसकी आवाज़ भी बछड़े की सी थी उस पर बाज़ लोग कहने लगे यही तुम्हारा (भी) माबूद और मूसा का (भी) माबूद है मगर वह भूल गया है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) और Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **बछड़े की मूरत (Golden Calf Idol): सामरी ने बछड़े की मूरत बनाई, और क़ौम के कुछ लोग उसे ईश्वर मानने लगे। इस घटना में तर्क का अभाव है, क्योंकि बछड़े को माबूद मानना एक मूर्तिपूजा का उदाहरण है। Nyaya दर्शन में यह सवाल उठता है कि एक निर्जीव वस्तु को ईश्वर के रूप में क्यों पूजा जा रहा है। यह एक विश्वास का मामला है, लेकिन इसके पीछे कोई प्रमाण और तर्क नहीं है।**
- **तर्क की असंगति (Inconsistency in Reasoning): बछड़े की आवाज़ को एक ईश्वर के रूप में मानने का तर्क अव्याख्यायित है। Nyaya दर्शन में यह माना जाता है कि तर्क एक प्रमाणित कारण पर आधारित होना चाहिए, जबकि यहाँ केवल विश्वास और आस्था पर निर्भर किया गया है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" और "प्रमेय" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दी गई प्रक्रिया को तर्क और प्रमाण के आधार पर नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 89 (सूरए आराफ़, 7:89)

अनुवाद: "भला इनको इतनी भी न सूझी कि ये बछड़ा न तो उन लोगों को पलट कर उन की बात का जवाब ही देता है और न उनका ज़रर ही उस के हाथ में है और न नफ़ा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **बछड़े की अक्षमता (Inability of the Calf): यह आयत बछड़े की अक्षमता को उजागर करती है, यह कहती है कि बछड़ा न तो किसी का भला कर सकता है और न ही किसी का नुकसान कर सकता है। यह तर्क Nyaya दर्शन के "प्रमेय" (Object of Knowledge) के सिद्धांत से मेल खाता है, क्योंकि यहाँ पर यह दिखाया गया है कि एक निर्जीव वस्तु को ईश्वर मानने का दावा तर्कसंगत नहीं है। यह दृश्य स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि बछड़ा न तो लाभकारी हो सकता है और न ही हानिकारक, और इस प्रकार उसे ईश्वर के रूप में पूजा जाना गलत है।**

निष्कर्ष: यह आयत "प्रमेय" के सिद्धांत से मेल खाती है, क्योंकि यह बछड़े की अक्षमता को प्रमाणित करती है, जो इसे ईश्वर के रूप में पूजा जाने के तर्क को खारिज करती है।

आयत 90 (सूरए आराफ़, 7:90)

अनुवाद: "और हारून ने उनसे पहले कहा भी था कि ऐ मेरी क़ौम तुम्हारा सिर्फ़ इसके ज़रिये से इम्तिहान किया जा रहा है और इसमें शक नहीं कि तम्हारा परवरदिगार (बस ख़ुदाए रहमान है) तो तुम मेरी पैरवी करो और मेरा कहा मानो।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **हारून की सलाह (Aaron's Advice): हारून अपनी क़ौम से कहता है कि उनका इम्तिहान हो रहा है और उन्हें उसे स्वीकार करना चाहिए। यह तर्क आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समझ में आता है, लेकिन Nyaya दर्शन में किसी भी धार्मिक सलाह को प्रमाणित कारण और तर्क के आधार पर समझना जरूरी है। यहाँ पर हारून का तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसे प्रमाणित या तात्त्विक रूप से सिद्ध नहीं किया गया है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यहाँ दी गई सलाह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई प्रमाण और तर्क नहीं दिया गया है।

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
86	**कारण (Hetu) और प्रमेय (Prameya)**	**मूसा का गुस्सा और आरोप प्रमाणित तर्क पर आधारित नहीं है।**
87	**कारण (Hetu)**	**सामरी के प्रभाव को प्रमाणित और तर्कसंगत रूप से स्पष्ट नहीं किया गया है।**
88	**कारण (Hetu) और प्रमेय (Prameya)**	**बछड़े की पूजा का तर्क अव्याख्यायित है।**
89	**प्रमेय (Prameya)**	**बछड़े की अक्षमता को प्रमाणित करने वाला तर्क दिया गया है।**
90	**कारण (Hetu)**	**हारून की सलाह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई तर्क नहीं है।**

इन आयतों में अधिकांश तर्कों में प्रमाण और स्पष्टता की कमी है, जिससे ये Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खातीं।

आयत 91 (सूरए आराफ़, 7:91)

अनुवाद: "तो वह लोग कहने लगे जब तक मूसा हमारे पास पलट कर न आएँ हम तो बराबर इसकी परसतिश पर डटे बैठे रहेंगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) और Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **इन्तजार और विश्वास (Waiting and Belief)**: यह आयत क़ौम की मानसिकता को व्यक्त करती है, जिसमें वे मूसा की वापसी तक बछड़े की पूजा को छोड़ने को तैयार नहीं हैं। यह तर्क मानसिक और आस्थापरक स्थिति को दर्शाता है, लेकिन Nyaya दर्शन में आस्थाएँ बिना प्रमाण और तर्क के नहीं मानी जा सकतीं। क़ौम का यह दावा केवल आस्था पर आधारित है, लेकिन इसका कोई तर्क और प्रमाण नहीं है।
- **आस्थापूर्वक निर्णय (Faith-based Decision)**: क़ौम का यह निर्णय बिना किसी तर्क और प्रमाण के किया गया है। यह केवल मूसा की वापसी का इंतजार करने के बारे में है, न कि उस पूजा की व्यावहारिक या तात्त्विक स्थिति को समझने के बारे में।

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" और "प्रमेय" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि क़ौम का निर्णय केवल आस्था पर आधारित है और इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

आयत 92 (सूरए आराफ़, 7:92)

अनुवाद: "मूसा ने हारून की तरफ ख़िताब करके कहा ऐ हारून जब तुमने उनको देख लिया था गुमराह हो गए हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **गुमराही का आरोप (Accusation of Deviation)**: मूसा हारून पर आरोप लगाते हैं कि उसने क़ौम को गुमराह होने दिया। यह तर्क केवल आरोप पर आधारित है, बिना किसी ठोस प्रमाण या व्यावहारिक कारण के। Nyaya दर्शन के अनुसार, आरोप बिना प्रमाण के तर्क के रूप में मान्य नहीं हो सकते।
- **निराधार आरोप (Groundless Accusation)**: मूसा का यह आरोप बिना किसी साक्ष्य के हारून पर लगाया गया है। Nyaya दर्शन में किसी भी आरोप को प्रमाण और व्यावहारिक तर्क से जोड़कर पेश किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए आरोप के लिए कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

आयत 93 (सूरए आराफ़, 7:93)

अनुवाद: "तो तुम्हें मेरी पैरवी (क़ता) करने को किसने मना किया तो क्या तुमने मेरे हुक्म की नाफ़रमानी की।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) और Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:

- **नाफ़रमानी का आरोप (Accusation of Disobedience): मूसा हारून से पूछते हैं कि उसे उनकी पैरवी करने से किसने रोका। यह तर्क आरोप के आधार पर है, जो केवल भावनाओं और व्यक्तिगत आरोपों पर आधारित है, बिना किसी प्रमाण और तर्क के।**
- **नाफ़रमानी की धारणा (Perception of Disobedience): मूसा का यह कहना कि हारून ने उनका आदेश नहीं माना, यह बिना प्रमाण के आरोप है। Nyaya दर्शन में किसी भी आरोप को प्रमाण और तर्क के आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जो यहाँ अनुपस्थित है।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" और "प्रमेय" के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती, क्योंकि यहाँ आरोप बिना तर्क और प्रमाण के लगाए गए हैं।

आयत 94 (सूरए आराफ़, 7:94)

अनुवाद: "हारून ने कहा ऐ मेरे माँजाए (भाई) मेरी दाढ़ी न पकड़िए और न मेरे सर (के बाल) मैं तो उससे डरा कि (कहीं) आप (वापस आकर) ये (न) कहिए कि तुमने बनी इसराईल में फूट डाल दी और मेरी बात का भी ख़्याल न रखा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **हारून का डर (Fear of Aaron): हारून का कहना है कि वह इसलिए चुप रहे क्योंकि उन्हें डर था कि मूसा वापस आकर उन पर आरोप लगाएंगे कि उन्होंने क़ौम में फूट डाल दी। यह तर्क इस बात को**

दर्शाता है कि हारून ने अपनी स्थिति को समझने और मूसा के गुस्से से बचने के लिए चुप्पी साधी। यह तर्क व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, लेकिन यह Nyaya दर्शन के "प्रमेय" (Object of Knowledge) के सिद्धांत के अनुरूप नहीं है, क्योंकि यह किसी ठोस प्रमाण पर आधारित नहीं है।

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" के सिद्धांत से मेल खाती है, लेकिन यह अभी भी व्यावहारिक तर्क पर आधारित है, जो Nyaya के दृष्टिकोण से पर्याप्त नहीं है।

आयत 95 (सूरए आराफ़, 7:95)

अनुवाद: "तब सामरी से कहने लगे कि ओ सामरी तेरा क्या हाल है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **सामरी से पूछताछ (Inquiry to Samaritan): मूसा सामरी से पूछते हैं कि उसका क्या हाल है। यह तर्क केवल सामरी की स्थिति को जानने के उद्देश्य से किया गया है, लेकिन Nyaya दर्शन में किसी भी तर्क को कारण और परिणाम से जोड़कर प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इस आयत में कोई ठोस कारण और परिणाम नहीं दिए गए हैं।**

निष्कर्ष: यह आयत "हेतु" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कारण और परिणाम का स्पष्ट संबंध नहीं है।

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
91	**कारण (Hetu) और प्रमेय (Prameya)**	**क़ौम का निर्णय केवल आस्था पर आधारित है, जिसमें तर्क और प्रमाण की कमी है।**
92	**कारण (Hetu)**	**मूसा का आरोप बिना प्रमाण के है और गुस्से पर आधारित है।**

93	**कारण (Hetu) और प्रमेय (Prameya)**	**आरोप बिना तर्क और प्रमाण के लगाए गए हैं।**
94	**कारण (Hetu)**	**हारून का डर व्यावहारिक तर्क है, लेकिन यह Nyaya के सिद्धांत के अनुसार पर्याप्त नहीं है।**
95	**कारण (Hetu)**	**सामरी से पूछताछ के लिए कोई ठोस कारण नहीं दिया गया है।**

इन आयतों में अधिकांश तर्कों में प्रमाण और स्पष्टता की कमी है, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खातीं।

आयत 96 (सूरए आराफ़, 7:96)

अनुवाद: "उसने (जवाब में) कहा मुझे वह चीज़ दिखाई दी जो औरों को न सूझी (जिबरील घोड़े पर सवार जा रहे थे) तो मैंने जिबरील फरिश्ते (के घोड़े) के निशाने क़दम की एक मुट्ठी (ख़ाक) की उठा ली फिर मैंने (बछड़े के क़ालिब में) डाल दी (तो वह बोलेने लगा और उस वक़्त मुझे मेरे नफ्स ने यही सुझाया।)"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) □□ Pramāṇa (Means of Knowledge)

विश्लेषण:

- **अदृश्य घटनाओं का दावा (Claim of the Invisible): यह आयत जिबरील के घोड़े के क़दम की धूल और उसका इस्तेमाल करने का बयान करती है। यह दावा ऐसी घटनाओं का वर्णन करता है, जिन्हें केवल आधिकारिक रूप से स्वीकारा गया है, लेकिन इन्हें प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। Nyaya दर्शन में, किसी भी घटना को प्रमाण के माध्यम से समझाना अनिवार्य है, और अगर यह केवल अनुभव और दृश्य ज्ञान पर आधारित नहीं है, तो इसे तर्कसंगत रूप से सत्य नहीं माना जा सकता।**
- **स्मरण शक्ति और नफ्स का प्रभाव (Memory and the Influence of the Self): सामरी के अनुसार, उसने जो किया, वह उसके नफ्स (आत्मा) के सुझाव से था। यह विचार एक व्यक्ति की मानसिक स्थिति और आंतरिक प्रेरणाओं को दर्शाता है, लेकिन Nyaya के अनुसार, जब तक यह आंतरिक सुझाव किसी ठोस अनुभव या प्रमाण पर आधारित न हो, यह तर्क की कमी को दिखाता है।**

निष्कर्ष: यह आयत प्रमाण और सत्यापन के आधार पर कमजोर है, क्योंकि इसमें जिन घटनाओं का वर्णन किया गया है, उनका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिया गया है। यह Nyaya के सिद्धांतों के अनुसार विश्वास और आस्था पर आधारित है, न कि प्रमाणित तर्क पर।

आयत 97 (सूरए आराफ़, 7:97)

अनुवाद: "मूसा ने कहा चल (दूर हो) तेरे लिए (इस दुनिया की) ज़िंदगी में तो (ये सज़ा है) तू कहता फिरेगा कि मुझे न छूना (वरना बुख़ार चढ़ जाएगा) और (आख़िरत में भी) यक़ीनन तेरे लिए (अज़ाब का) वायदा है कि हरगिज़ तुझसे ख़िलाफ़ न किया जाएगा और तू अपने माबूद को तो देख जिस (की इबादत) पर तू डट बैठा था कि हम उसे यक़ीनन जलाकर (राख) कर डालेंगे फिर हम उसे तितिर बितिर करके दरिया में उड़ा देगें।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) और Vyapti (Universal Cause)

विश्लेषण:

- **सजा और परिणाम (Punishment and Consequence): मूसा ने सामरी को स्पष्ट रूप से चेतावनी दी कि उसकी कर्मों का परिणाम निश्चित है। यह तर्क "Vyapti" (Universal Cause) के सिद्धांत के अनुरूप है, जिसमें किसी क्रिया का परिणाम उसकी प्रकृति और कारण के आधार पर निश्चित होता है। लेकिन, यहाँ मूसा का कथन केवल भविष्यवाणी पर आधारित है, जिसका कोई व्यावहारिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। इसे Nyaya दर्शन के अनुसार अप्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में माना जा सकता है, जो सत्यता का प्रमाण नहीं है।**
- **दृष्टांत का नष्टकरण (Destruction of an Idol): मूसा ने सामरी के द्वारा बनाए गए बछड़े को नष्ट करने का वादा किया है। यह प्रतीकात्मक रूप से एक शास्त्रार्थ का रूप लेता है, लेकिन इसे केवल तात्त्विक दृष्टिकोण से ही देखा जा सकता है, और यह अपने आप में एक प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष: यह आयत "Vyapti" सिद्धांत से मेल खाती है, क्योंकि यह विशेष कारण (सामरी का बछड़े की पूजा करना) और परिणाम (उसकी नष्टता) के बीच के संबंध को दर्शाती है, लेकिन यह केवल भविष्यवाणी है और Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से प्रमाणित नहीं की जा सकती।

आयत 98 (सूरए आराफ़, 7:98)

अनुवाद: "तुम्हारा माबूद तो बस वही ख़ुदा है जिसके सिवा कोई और माबूद बरहक़ नहीं कि उसका इल्म हर चीज़ पर छा गया है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramāṇa (Means of Knowledge) □□ Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **एकता का सिद्धांत (The Principle of Unity)**: □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□□□□ Nyaya □□□□□ □□□ □□ "Pramāṇa" (□□□□□□□) □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□, □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□
- **सर्वव्यापी ज्ञान (Universal Knowledge): ईश्वर के ज्ञान के बारे में कहा गया है कि वह "हर चीज़ पर छा गया है," लेकिन यह ज्ञान भी प्रमाण से परे है। Nyaya दर्शन के अनुसार, सर्वव्यापी ज्ञान का कोई ठोस प्रमाण या व्यावहारिक उदाहरण होना चाहिए, जो यहाँ अनुपस्थित है।**

निष्कर्ष: यह आयत विश्वास और आस्था पर आधारित है, और Nyaya दर्शन के प्रमाणिक सिद्धांतों से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाण या ठोस तर्क नहीं दिया गया है।

आयत 99 (सूरए आराफ़, 7:99)

अनुवाद: "(ऐ रसूल) हम तुम्हारे सामने यूँ वाक़ेयात बयान करते हैं जो गुज़र चुके और हमने ही तुम्हारे पास अपनी बारगाह से कुरआन अता किया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramāṇa (Means of Knowledge) □□ Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **इतिहास और ज्ञान का बयान (Narration of History and Knowledge): यह आयत इतिहास की घटनाओं और ज्ञान के बयान को प्रस्तुत करती है। Nyaya दर्शन के अनुसार, यदि कोई इतिहास प्रस्तुत किया जाता है, तो उसका तात्त्विक आधार और प्रमाण होना चाहिए। यहाँ इतिहास का बयान केवल शाब्दिक रूप से किया गया है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या व्यावहारिक विश्लेषण नहीं है।**
- **कुरआन का प्रमाण (Proof of the Quran): आयत में यह भी कहा गया है कि यह ज्ञान और घटनाएँ कुरआन से आई हैं, लेकिन कुरआन स्वयं एक धार्मिक ग्रंथ है और Nyaya दर्शन में कोई शास्त्र या ग्रंथ तभी प्रमाण माना जा सकता है, जब उसमें तर्क, प्रमाण और व्यावहारिक सत्यता हो।**

निष्कर्ष: □□ □□□ "Pramāṇa" (□□□□□□□□) □□ "Hetu" (□□□□□) □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□, □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□

आयत 100 (सूरए आराफ़, 7:100)

अनुवाद: "जिसने उससे मुँह फेरा वह क़यामत के दिन यक़ीनन (अपने बुरे आमाल का) बोझ उठाएंगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) और Vyapti (Universal Cause)

विश्लेषण:

- **कर्म और परिणाम (Action and Consequence): यह आयत कर्म और उसके परिणाम के बीच के संबंध को स्थापित करती है। Nyaya दर्शन में यह विचार ठीक है कि किसी कार्य का परिणाम उसके कारण पर आधारित होता है, लेकिन इसमें यह बताया गया है कि मुँह फेरने वाला व्यक्ति अपने बुरे कर्मों का बोझ उठाएगा। यह एक आस्थापरक विचार है, लेकिन इसे व्यावहारिक और प्रमाणिक दृष्टिकोण से साबित नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष: यह आयत "Vyapti" और "Hetu" के सिद्धांतों से मेल खाती है, लेकिन इसमें कोई प्रमाण और व्यावहारिक साक्ष्य नहीं दिया गया है, जो Nyaya दर्शन के दृष्टिकोण से इसे सिद्ध करता हो।

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
96	Hetu □□ Pramāṇa	**यह आयत प्रमाण से परे की घटनाओं का वर्णन करती है, जो Nyaya के अनुसार प्रमाणित नहीं हैं।**
97	**Hetu और Vyapti**	**यह केवल भविष्यवाणी पर आधारित है, और इसका व्यावहारिक प्रमाण नहीं है।**
98	Pramāṇa □□ Hetu	**यह आयत आस्था पर आधारित है, जिसमें प्रमाण का अभाव है।**
99	Pramāṇa □□ Hetu	**आयत में बयान किए गए इतिहास और ज्ञान का कोई प्रमाण नहीं दिया**

		गया है।
100	**Hetu और Vyapti**	**यह आयत आस्थापरक है, जिसमें कर्म और परिणाम के संबंध को दर्शाया गया है, लेकिन इसमें कोई प्रमाण नहीं है।**

ये आयतें ज्यादातर आस्था और विश्वास पर आधारित हैं, जिसमें प्रमाण और तर्क की कमी है। Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, प्रमाण और व्यावहारिक तर्क के बिना इनका मूल्यांकन करना चुनौतीपूर्ण है।

आयत 101 (सूरए आराफ़, 7:101)

अनुवाद: "और उसी हाल में हमेशा रहेंगे और क्या ही बुरा बोझ है क़यामत के दिन ये लोग उठाए होंगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) और Vyapti (Universal Cause)

विश्लेषण:

- **क़यामत और बोझ (Judgment Day and the Burden): यह आयत क़यामत के दिन के बोझ के बारे में बात करती है। यह विचार, "बुरा बोझ", Nyaya दर्शन के अनुसार अप्रत्यक्ष रूप से क़यामत के दिन के परिणामों को व्यक्त करने की कोशिश करता है। हालांकि, इसका कोई व्यावहारिक प्रमाण नहीं दिया गया है, जो इस "बोझ" को प्रमाणित कर सके।**
- **कारण और परिणाम (Cause and Effect): यह आयत क़यामत के दिन के परिणामों से संबंधित है, लेकिन Nyaya के अनुसार इसे "Vyapti" सिद्धांत से समर्थन नहीं मिलता क्योंकि यह केवल भविष्यवाणी है, न कि एक प्रमाणित कारण और परिणाम।**

निष्कर्ष: यह आयत विश्वास और भविष्यवाणी पर आधारित है, और Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से प्रमाणित नहीं हो सकती, क्योंकि इसमें किसी ठोस प्रमाण या तर्क का अभाव है।

आयत 102 (सूरए आराफ़, 7:102)

अनुवाद: "जिस दिन सूर फूँका जाएगा और हम उस दिन गुनाहगारों को (उनकी) आँखें मैली (अन्धी) करके (आमने-सामने) जमा करेंगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) □□ Pramāṇa (Means of Knowledge)

विश्लेषण:

- **सूर फूँकने का कथन (The Blowing of the Trumpet): यह आयत सूर फूँके जाने और इसके परिणामस्वरूप गुनाहगारों की अंधी आँखों का ज़िक्र करती है। यह एक आस्थापरक दावा है, जिसमें कोई प्रमाण नहीं है। Nyaya दर्शन के अनुसार, जब कोई घटना घटित होती है, तो उसके प्रमाण और तर्क का होना जरूरी है, जिसे इस आयत में प्रस्तुत नहीं किया गया।**
- **साक्ष्य और प्रमाण का अभाव (Lack of Evidence): यह केवल एक भविष्यवाणी और विश्वास पर आधारित कथन है, जिसे प्रमाणित करने के लिए कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं है।**

निष्कर्ष: यह आयत प्रमाण और व्यावहारिक ज्ञान से परे है। Nyaya दर्शन के अनुसार, इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसमें कोई साक्ष्य नहीं है।

आयत 103 (सूरए आराफ़, 7:103)

अनुवाद: "आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे कि (दुनिया या क़ब्र में) हम लोग (बहुत से बहुत) नौ दस दिन ठहरे होंगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramāṇa (Means of Knowledge) 🔍 Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **आत्म-चर्चा और अनुमान (Self-Talk and Assumption): यह आयत क़यामत के दिन गुनाहगारों के बीच होने वाली बातचीत को दर्शाती है, जिसमें वे सोचते हैं कि वे बहुत कम समय के लिए ठहरे होंगे। यह केवल अनुमान पर आधारित है, और Nyaya दर्शन में किसी बात को सही ठहराने के लिए ठोस प्रमाण की आवश्यकता होती है, जो यहाँ अनुपस्थित है।**
- **काल और समय की परिभाषा (The Concept of Time): यहाँ समय के एक छोटे अंतराल के बारे में चर्चा हो रही है, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार समय को एक ठोस, भौतिक रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए, जिसे इस संदर्भ में प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष: यह आयत आत्म-चर्चा और अनुमान पर आधारित है। Nyaya दर्शन के दृष्टिकोण से, किसी भी तथ्य का समर्थन ठोस प्रमाण और तर्क से होना चाहिए, जो यहाँ उपलब्ध नहीं है।

आयत 104 (सूरए आराफ़, 7:104)

अनुवाद: "जो कुछ ये लोग (उस दिन) कहेंगे हम ख़ूब जानते हैं कि जो इनमें सबसे ज़्यादा होशियार होगा बोल उठेगा कि तुम बस (बहुत से बहुत) एक दिन ठहरे होगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Universal Cause) और Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **हिस्सेदारी और ज्ञान (Participation and Knowledge): आयत में यह कहा गया है कि सबसे होशियार व्यक्ति यह कहेगा कि वे केवल एक दिन ठहरे थे। यह विचार Nyaya के "Vyapti" सिद्धांत से मेल खाता है, क्योंकि यह एक सामान्य कारण और परिणाम के सिद्धांत को दर्शाता है, यानी इस प्रकार की सोच सभी गुनाहगारों के लिए सामान्य है।**
- **भविष्यवाणी (Prediction): हालाँकि, यह भविष्यवाणी केवल अनुमान पर आधारित है और Nyaya दर्शन में भविष्यवाणियाँ बिना प्रमाण के सही नहीं मानी जातीं।**

निष्कर्ष: यह आयत सामान्य कारण और परिणाम के सिद्धांत से मेल खाती है, लेकिन इसमें भविष्यवाणी और अनुमान पर जोर दिया गया है, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से प्रमाणित नहीं हो सकती।

आयत 105 (सूरए आराफ़, 7:105)

अनुवाद: "(और ऐ रसूल) तुम से लोग पहाड़ों के बारे में पूछा करते हैं (कि क़यामत के रोज़ क्या होगा) तो तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार बिल्कुल रेज़ा रेज़ा करके उड़ा डालेगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramāṇa (Means of Knowledge) □□ Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **पर्वतों के नष्ट होने का कथन (The Destruction of the Mountains): यह आयत पर्वतों के नष्ट होने की बात करती है, जिसे केवल एक भविष्यवाणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी घटना का वर्णन करने से पहले उसका प्रमाण और ठोस तर्क दिया जाना चाहिए। यहाँ केवल आस्थापरक कथन है, जो प्रमाणित नहीं है।**
- **अज्ञेय और अव्याख्येय तत्व (Unknown and Unexplainable Elements): यह दावा केवल एक अलौकिक घटना के बारे में है, जिसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण या व्यावहारिक आधार नहीं दिया गया है।**

निष्कर्ष: यह आयत बिना किसी प्रमाण या ठोस तर्क के भविष्यवाणी पर आधारित है, जो Nyaya दर्शन के प्रमाणिक सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
101	**Hetu और Vyapti**	**यह आयत केवल भविष्यवाणी और आस्था पर आधारित है, और इसमें कोई प्रमाण नहीं दिया गया है।**
102	Hetu □□ Pramāṇa	**यह केवल भविष्यवाणी पर आधारित है और इसका प्रमाण नहीं दिया गया है।**
103	Pramāṇa □□ Hetu	**यह अनुमान और आत्म-चर्चा पर आधारित है, जो प्रमाण से परे है।**
104	**Vyapti और Hetu**	**यह सामान्य कारण और परिणाम के सिद्धांत से मेल खाती है, लेकिन यह भी भविष्यवाणी पर आधारित है।**
105	Pramāṇa □□ Hetu	**यह आयत बिना प्रमाण और ठोस तर्क के भविष्यवाणी पर आधारित है।**

ये आयतें आस्था और भविष्यवाणियों पर आधारित हैं, और Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इनमें कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं है, जो इन्हें प्रमाणित कर सके।

आयत 106 (सूरए आराफ़, 7:106)

अनुवादः "और ज़मीन को एक चटियल मैदान कर छोड़ेगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Universal Cause) □□ Pramāṇa (Means of Knowledge)

विश्लेषण:

- **चटियल मैदान का कथन (Flat Earth): यह आयत क़यामत के दिन भूमि के स्तर और स्थिति के बारे में बात करती है। यह कथन स्पष्ट रूप से क़यामत के दिन पृथ्वी की संरचना के बारे में एक**

भविष्यवाणी है, जो Nyaya दर्शन में बिना प्रमाण के है। पृथ्वी की वास्तविक अवस्था और भौतिक स्थितियाँ प्रमाणिक अनुसंधान के माध्यम से स्पष्ट की जाती हैं, न कि केवल धार्मिक कथनों से।

- **प्रमाण का अभाव (Lack of Evidence): इस प्रकार का कथन सिर्फ एक भविष्यवाणी पर आधारित है, और इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित करना संभव नहीं है।**

निष्कर्ष: यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन Nyaya दर्शन में इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें कोई भौतिक प्रमाण या तर्क नहीं है।

आयत 107 (सूरए आराफ़, 7:107)

अनुवाद: "कि (ऐ शख़्स) न तो तू उसमें मोड़ देखेगा और न ऊँच-नीच।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) ◻◻ Pramāṇa (Means of Knowledge)

विश्लेषण:

- **पृथ्वी की स्थिति (The State of the Earth): यहाँ यह दावा किया जा रहा है कि क़यामत के दिन ज़मीन की संरचना में कोई मोड़ या ऊँचाई नहीं होगी। यह विचार केवल धार्मिक आस्था पर आधारित है और Nyaya दर्शन के अनुसार इसे प्रमाणित करने के लिए कोई वैज्ञानिक या भौतिक आधार नहीं है।**
- **साक्ष्य का अभाव (Lack of Evidence): इस तरह के तर्कों में कोई भौतिक प्रमाण या व्यावहारिक अनुभव शामिल नहीं है, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप हो।**

निष्कर्ष: यह आयत बिना किसी प्रमाण के एक भविष्यवाणी पर आधारित है, जिसे Nyaya दर्शन के आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 108 (सूरए आराफ़, 7:108)

अनुवाद: "उस दिन लोग एक पुकारने वाले इसराफ़ील की आवाज़ के पीछे (इस तरह सीधे) दौड़ पड़ेगे कि उसमें कुछ भी कज़ी न होगी और आवाज़े उस दिन ख़ुदा के सामने (इस तरह) घिघियाएगें कि तू घुनघुनाहट के सिवा और कुछ न सुनेगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) ◻◻ Pramāṇa (Means of Knowledge)

विश्लेषण:

- **इस्राफ़ील की आवाज़ (The Trumpet of Israfil): यह आयत इस्राफ़ील की आवाज़ और उसके प्रभाव के बारे में बताती है। यह कथन धार्मिक विश्वास पर आधारित है और Nyaya दर्शन में इसे प्रमाणित करने के लिए कोई ठोस भौतिक प्रमाण नहीं है।**
- **साक्ष्य का अभाव (Lack of Evidence): यहाँ एक अलौकिक घटना का वर्णन किया गया है, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार, केवल आत्मविश्वास या विश्वास के आधार पर किसी घटना को प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष: यह आयत बिना प्रमाण और ठोस तर्क के एक भविष्यवाणी पर आधारित है। Nyaya दर्शन में इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 109 (सूरए आराफ़, 7:109)

अनुवाद: "उस दिन किसी की सिफ़ारिश काम न आएगी मगर जिसको ख़ुदा ने इजाज़त दी हो और उसका बोलना पसन्द करे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) □□ Pramāṇa (Means of Knowledge)

विश्लेषण:

- **सिफ़ारिश का सिद्धांत (The Concept of Intercession): इस आयत में सिफ़ारिश का उल्लेख किया गया है, जो धार्मिक दृष्टिकोण से एक सामान्य धारणा है। Nyaya दर्शन के अनुसार, किसी की सिफ़ारिश का प्रभाव बिना प्रमाण या व्यावहारिक समर्थन के प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **प्रमाण का अभाव (Lack of Evidence): सिफ़ारिश को लेकर यह दावा केवल आस्थापरक है, और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है जो इसे प्रमाणित कर सके।**

निष्कर्ष: यह आयत सिफ़ारिश के बारे में एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और Nyaya दर्शन के अनुसार इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं है।

आयत 110 (सूरए आराफ़, 7:110)

अनुवाद: "जो कुछ उन लोगों के सामने है और जो कुछ उनके पीछे है (ग़रज़ सब कुछ) वह जानता है और ये लोग अपने इल्म से उसपर हावी नहीं हो सकते।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramāṇa (Means of Knowledge) □□ Vyapti (Universal Cause)

विश्लेषण:

- **ख़ुदा का ज्ञान (Knowledge of Allah): इस आयत में यह कहा जा रहा है कि ख़ुदा का ज्ञान सर्वव्यापी है, और लोग अपने ज्ञान से उसपर हावी नहीं हो सकते। Nyaya दर्शन में ज्ञान को प्रमाण और तर्क के माध्यम से मूल्यांकन किया जाता है, लेकिन यहाँ केवल धार्मिक विश्वास और सर्वशक्तिमान के बारे में कहा गया है, जो प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **सर्वव्यापी ज्ञान (Omniscient Knowledge): सर्वव्यापी ज्ञान का सिद्धांत केवल धार्मिक आस्था पर आधारित है, और Nyaya दर्शन के अनुसार इसे व्यावहारिक प्रमाण के बिना साबित नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष: यह आयत ख़ुदा के ज्ञान पर आधारित है, लेकिन Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसमें कोई व्यावहारिक प्रमाण या तर्क नहीं है।

सारांश:

आयत संख्या	**चुना गया तत्व**	**मुख्य आलोचना**
106	Vyapti □□ Pramāṇa	**यह आयत केवल भविष्यवाणी और आस्था पर आधारित है, और इसमें कोई प्रमाण नहीं दिया गया है।**
107	Hetu □□ Pramāṇa	**यह कथन भी धार्मिक आस्था पर आधारित है और इसका कोई व्यावहारिक प्रमाण नहीं है।**
108	Hetu □□ Pramāṇa	**यह केवल भविष्यवाणी पर आधारित है और इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया है।**
109	Hetu □□ Pramāṇa	**यह आयत सिफ़ारिश के बारे में एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और Nyaya दर्शन के अनुसार इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
110	Pramāṇa □□ Vyapti	**यह आयत ख़ुदा के सर्वव्यापी ज्ञान पर आधारित है, जो बिना प्रमाण के**

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
		साबित नहीं किया जा सकता।

ये आयतें धार्मिक विश्वासों और भविष्यवाणियों पर आधारित हैं, जिनका Nyaya दर्शन के सिद्धांतों से कोई प्रमाणिक आधार नहीं है।

आयत 111 (सूरए आराफ़, 7:111)

अनुवाद: "और (क़यामत में) सारी (ख़ुदाई के) मुँह ज़िन्दा और बाक़ी रहने वाले ख़ुदा के सामने झुक जाएँगे और जिसने ज़ुल्म का बोझ (अपने सर पर) उठाया वह यक़ीनन नाकाम रहा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Universal Cause) 🔗 Pramāṇa (Means of Knowledge)

विश्लेषण:

- **झुकना और जुल्म का बोझ: यह आयत क़यामत के दिन के दृश्य का वर्णन करती है, जिसमें सभी मुँह झुक जाएँगे और जो व्यक्ति जुल्म का बोझ उठाएगा, वह नाकाम रहेगा। यहाँ धार्मिक विश्वास के आधार पर एक भविष्यवाणी की जा रही है, लेकिन Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जो इस घटना की पुष्टि कर सके।**
- **व्यावहारिक प्रमाण का अभाव (Lack of Practical Evidence): इस प्रकार के दृश्य और घटनाएँ केवल धार्मिक कथाओं पर आधारित हैं, जो Nyaya दर्शन में व्यावहारिक रूप से प्रमाणित नहीं हो सकतीं क्योंकि इसमें कोई भौतिक या तार्किक प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष: यह आयत एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसे Nyaya दर्शन के आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसमें कोई प्रमाण या तर्क नहीं है।

आयत 112 (सूरए आराफ़, 7:112)

अनुवाद: "और जिसने अच्छे-अच्छे काम किए और वह मोमिन भी है तो उसको न किसी तरह की बेइन्साफ़ी का डर है और न किसी नुक़सान का।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) 🔗 Pramāṇa (Means of Knowledge)

विश्लेषण:

- **अच्छे काम और मोमिन होने का सिद्धांत: यहाँ पर यह कहा जा रहा है कि जो अच्छे काम करेगा और मोमिन होगा, उसे किसी प्रकार की बेइंसाफी या नुकसान का डर नहीं होगा। यह सिद्धांत धार्मिक विश्वास और नैतिकता पर आधारित है, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार, इस कथन का कोई प्रमाण नहीं दिया गया है कि केवल अच्छे काम करने से किसी को शारीरिक या मानसिक नुकसान से मुक्ति मिल सकती है।**
- **साक्ष्य का अभाव (Lack of Evidence): इस कथन में कोई व्यावहारिक या भौतिक प्रमाण नहीं है, जो इसे प्रमाणित कर सके। केवल विश्वास और उम्मीद पर आधारित यह बयान Nyaya दर्शन के तर्क के अनुसार कमज़ोर है।**

निष्कर्ष: यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है और Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार इसे प्रमाणित करना संभव नहीं है।

आयत 113 (सूरए आराफ़, 7:113)

अनुवाद: "हमने उसको उसी तरह अरबी ज़बान का कुरान नाज़िल फ़रमाया और उसमें अज़ाब के तरह-तरह के वायदे बयान किए ताकि ये लोग परहेज़गार बनें या उनके मिजाज में इबरत पैदा कर दे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramāṇa (Means of Knowledge) ￼￼ Hetu (Reason)

विश्लेषण:

- **कुरआन का अरबी में अवतरण: यहाँ कुरआन के अरबी में नाज़िल होने की बात की गई है और इसमें अज़ाब (सज़ा) के वायदे दिए गए हैं ताकि लोग परहेज़गार बनें। यह धार्मिक दृष्टिकोण से मान्यता प्राप्त है, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार, केवल भाषा या वचन से किसी का मन बदलना और अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करना तार्किक आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **वैज्ञानिक और भौतिक दृष्टिकोण (Scientific and Physical Perspective): इस प्रकार के कथन का कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है, जो इसे तार्किक रूप से प्रमाणित कर सके। यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है।**

निष्कर्ष: यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है और Nyaya दर्शन के आधार पर इसका कोई भौतिक या तार्किक प्रमाण नहीं दिया जा सकता।

आयत 114 (सूरए आराफ़, 7:114)

अनुवाद: "पस (दो जहाँ का) सच्चा बादशाह ख़ुदा बरतर व आला है और (ऐ रसूल) कुरान के (पढ़ने) में उससे पहले कि तुम पर उसकी 'वही' पूरी कर दी जाए जल्दी न करो और दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले मेरे इल्म को और ज़्यादा फ़रमा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) और Vyapti (Universal Cause)

विश्लेषण:

- **ख़ुदा की सर्वोच्चता और ज्ञान का वादा**: इस आयत में ख़ुदा के सर्वोच्च होने और उसके ज्ञान के बारे में बात की जा रही है। यह धार्मिक विश्वास है, लेकिन Nyaya दर्शन के अनुसार, यह सिद्धांत प्रमाणिक नहीं है क्योंकि केवल आध्यात्मिक या धार्मिक दृष्टिकोण से ही इसे देखा जाता है, न कि भौतिक प्रमाणों से।
- **ज्ञान में वृद्धि की प्रार्थना**: यहाँ यह भी कहा गया है कि रसूल को ज्ञान में वृद्धि की प्रार्थना करनी चाहिए। यह धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या भौतिक आधार नहीं है जो इसे प्रमाणित कर सके।

निष्कर्ष: यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें कोई भौतिक प्रमाण या तार्किक समर्थन नहीं है।

आयत 115 (सूरए आराफ़, 7:115)

अनुवाद: "और हमने आदम से पहले ही एहद ले लिया था कि उस दरख़्त के पास न जाना तो आदम ने उसे तर्क कर दिया और हमने उनमें सबात व इसतेक़लाल न पाया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason) □□ Pramāṇa (Means of Knowledge)

विश्लेषण:

- **आदम और दरख़्त का कथन**: यह आयत आदम और उस विशेष दरख़्त के बारे में है, जिसमें आदम से यह वादा लिया गया था कि वह उस दरख़्त के पास नहीं जाएँ। यह धार्मिक कथा है और Nyaya दर्शन के अनुसार, ऐसे कथन बिना प्रमाण के होते हैं और इसका कोई भौतिक या तार्किक प्रमाण नहीं है।

- **व्यावहारिक अनुभव का अभाव (Lack of Practical Experience)**: इस प्रकार के ऐतिहासिक या धार्मिक घटनाओं का प्रमाण नहीं मिल सकता, क्योंकि ये विश्वास और आस्था पर आधारित होते हैं, न कि वास्तविकता पर।

निष्कर्ष: यह आयत भी एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

सारांश:

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
111	Vyapti □□ Pramāṇa	यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई व्यावहारिक या भौतिक प्रमाण नहीं है।
112	Hetu □□ Pramāṇa	इस कथन में कोई प्रमाण नहीं है, यह केवल विश्वास पर आधारित है।
113	Pramāṇa □□ Hetu	यह आयत भी धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और इसका कोई व्यावहारिक प्रमाण नहीं है।
114	**Hetu और Vyapti**	यह आयत ख़ुदा की सर्वोच्चता और ज्ञान पर आधारित है, जो Nyaya दर्शन में प्रमाणित नहीं हो सकता।
115	Hetu □□ Pramāṇa	यह आयत आदम और दरख़्त के बारे में एक धार्मिक कथा है, जिसका कोई भौतिक या तार्किक प्रमाण नहीं है।

इन आयतों में अधिकांश कथन धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं, जिनका Nyaya दर्शन के अनुसार प्रमाणित करना संभव नहीं है, क्योंकि इनमें कोई व्यावहारिक प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है।

Nyaya Darshan Critical Analysis of Quranic Verses

आयत 116 (सूरए बकरा, 2:116)

अनुवाद:
"और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सबने सजदा किया मगर शैतान ने इन्कार किया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत एक पौराणिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जिसमें आदम (मनुष्य) को सजदा करने का आदेश दिया गया और शैतान ने इससे इंकार किया। "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के दृष्टिकोण से, इस कथन का आधार एक तात्त्विक या वैज्ञानिक सत्य पर आधारित नहीं है। आदम के अस्तित्व और शैतान के इस प्रकार के कार्यों के बीच कोई प्रामाणिक प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है।
Nyaya दर्शन के अनुसार, "प्रमेय" का सिद्धांत उस वस्तु के अस्तित्व या सत्य को प्रमाणित करता है जिस पर ज्ञान आधारित है। इस संदर्भ में, न तो आदम का और न ही शैतान का अस्तित्व कोई तात्त्विक प्रमाण प्रस्तुत करता है, यह केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो Nyaya दर्शन के "प्रमेय" के सिद्धांत के अनुरूप नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Prameya" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई ठोस तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 117 (सूरए बकरा, 2:117)

अनुवाद:
"तो मैंने (आदम से कहा) कि ऐ आदम ये यक़ीनी तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुशमन है तो कहीं तुम दोनों को बेहिश्त से निकलवा न छोड़े तो तुम (दुनिया की) मुसीबत में फँस जाओ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि शैतान आदम और उनकी बीवी का दुशमन है और वह उन्हें बेहिश्त से बाहर निकालने की कोशिश करेगा। यहाँ पर "Hetu" (कारण) का अभाव है, क्योंकि आदम और हव्वा को यह चेतावनी क्यों दी जा रही है, इसके कारणों की स्पष्टता नहीं है। Nyaya दर्शन में, किसी भी घटना का विश्लेषण तर्कसंगत कारणों पर आधारित होना चाहिए। यहाँ पर केवल एक धार्मिक विश्वास व्यक्त किया गया है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से असंगत है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें स्पष्ट और तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।

आयत 118 (सूरए बकरा, 2:118)

अनुवाद:
"कुछ शक नहीं कि (बेहिश्त में) तुम्हें ये आराम है कि न तो तुम यहाँ भूके रहोगे और न नँगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत बेहिश्त के सुख-संसार का वर्णन करती है, जिसमें भूख, नंगापन, प्यास आदि से मुक्ति का दावा किया जाता है। Nyaya दर्शन में, "Pramana" (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी विचार को सत्य और प्रमाणित किया जाना चाहिए। यहाँ पर जो भौतिक सुखों का वर्णन किया गया है, वह तात्त्विक प्रमाणों से वंचित है, और यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या सत्य ज्ञान का अभाव है।

आयत 119 (सूरए बकरा, 2:119)

अनुवाद:
"और न यहाँ प्यासे रहोगे और न धूप खाओगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत आदम और हव्वा को यह आश्वासन देती है कि वे बेहिश्त में प्यासे नहीं रहेंगे और धूप से बचेंगे। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना का अनिवार्य परिणाम होना चाहिए। इस आयत में, बेहिश्त में सुख का दावा बिना किसी प्रमाण के किया जा रहा है, जो "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाता। यहाँ पर कोई निश्चित कारण या परिणाम नहीं दिया गया है, और यह सिर्फ विश्वास पर आधारित है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई अनिवार्य और प्रमाणित संबंध नहीं है।

आयत 120 (सूरए बकरा, 2:120)

अनुवादः
"तो शैतान ने उनके दिल में वसवसा डाला (और) कहा ऐ आदम क्या मैं तम्हें (हमेशगी की ज़िन्दगी) का दरख़्त और वह सल्तनत जो कभी ज़ाएल न हो बता दूँ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत शैतान द्वारा आदम को धोखा देने का वर्णन करती है। इसमें शैतान एक "हमेशगी की ज़िन्दगी का दरख़्त" और "सल्तनत" का लालच देता है। Nyaya दर्शन के "Pramana" (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, इस प्रकार के विचारों का कोई प्रमाण नहीं है। यह सिर्फ एक धार्मिक कहानी है, जिसमें कोई ठोस तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित ज्ञान या सत्य का आधार नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
116	**Prameya**	**आदम और शैतान के अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं है।**
117	**Hetu**	**चेतावनी का कोई तात्त्विक कारण नहीं दिया गया।**
118	**Pramana**	**भौतिक सुखों का दावा प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
119	**Vyapti**	**सुख के परिणाम का कोई अनिवार्य संबंध नहीं है।**
120	**Pramana**	**शैतान के वचनों का कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**

सारांश:

इन आयतों में दिए गए दावे और विचार Nyaya दर्शन के विभिन्न तत्वों से मेल नहीं खाते। इनमें विश्वास और कथाएँ प्रमाण और तर्क के बिना प्रस्तुत की गई हैं, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक बनाती हैं।

Nyaya Darshan Critical Analysis of Quranic Verses (Surah A'raf, 7:121-125)

आयत 121 (सूरए आराफ़, 7:121)

अनुवाद:
"चुनान्चे दोनों मियाँ बीबी ने उसी में से कुछ खाया तो उनका आगा पीछा उनपर ज़ाहिर हो गया और दोनों बेहिश्त के (दरख़्त के) पत्ते अपने आगे पीछे पर चिपकाने लगे और आदम ने अपने परवरदिगार की नाफ़रमानी की तो (राहे सवाब से) बेराह हो गए।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
इस आयत में आदम और हव्वा का बेहिश्त में से कुछ खा लेने के बाद उनके शरीर की स्थिति का वर्णन किया गया है। उनके शरीर पर पत्तों का चिपकना और इस कारण से उनके द्वारा नाफ़रमानी का किया जाना एक पौराणिक कहानी है। Nyaya दर्शन के "Pramana" (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी विचार को सत्य और प्रमाणित किया जाना चाहिए, जो इस आयत में अनुपस्थित है। यह कथन केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित ज्ञान नहीं दिया गया है।

आयत 122 (सूरए आराफ़, 7:122)

अनुवाद:
"इसके बाद उनके परवरदिगार ने बर गुज़ीदा किया फिर उनकी तौबा कुबूल की और उनकी हिदायत की।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत बताती है कि आदम और हव्वा ने अपने कर्मों पर पश्चाताप किया और अल्लाह ने उनकी तौबा स्वीकार की। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना या कार्य का कारण स्पष्ट होना चाहिए। यहाँ पर यह तर्क नहीं दिया गया कि तौबा को स्वीकार करने का कारण क्या था, और क्यों यह विशेष रूप से आदम और हव्वा के लिए था। तात्त्विक दृष्टि से, इस निर्णय को स्पष्ट रूप से प्रमाणित या तर्कसंगत तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी निर्णय का तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।

आयत 123 (सूरए आराफ़, 7:123)

अनुवादः
"फरमाया कि तुम दोनों बेहिश्त से नीचे उतर जाओ तुम में से एक का एक दुशमन है फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत पहुँचे तो (तुम) उसकी पैरवी करना क्योंकि जो शख़्स मेरी हिदायत पर चलेगा न तो गुमराह होगा और न मुसीबत में फँसेगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत बताती है कि यदि आदम और हव्वा को अल्लाह की हिदायत मिलती है, तो वे गुमराह नहीं होंगे और न ही मुसीबत में फँसेंगे। Nyaya दर्शन में "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) का सिद्धांत यह कहता है कि किसी भी घटना या स्थिति का एक निश्चित परिणाम होना चाहिए। यहाँ पर, यदि आदम और हव्वा ने हिदायत मानी, तो उनका मार्गदर्शन सही रहेगा, परंतु यह "Vyapti" सिद्धांत के अनुसार एक निश्चित और अनिवार्य परिणाम नहीं देता है। हिदायत के बाद की स्थिति की अनुपस्थितता और प्रमाणहीनता इसे अव्यावहारिक बनाती है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें हिदायत के परिणामों के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं दिया गया है।

आयत 124 (सूरए आराफ़, 7:124)

अनुवाद:
"और जिस शख़्स ने मेरी याद से मुँह फेरा तो उसकी ज़िन्दगी बहुत तंगी में बसर होगी और हम उसको क़यामत के दिन अंधा बना के उठाएँगे।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि जो लोग अल्लाह की याद से मुँह मोड़ते हैं, उनका जीवन कठिन होगा और क़यामत के दिन उन्हें अंधा उठाया जाएगा। Nyaya दर्शन के "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार, इस प्रकार के विचारों का कोई प्रमाण नहीं है। यह दावा बिना तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार के किया गया है, और यह केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है। "Pramana" के सिद्धांत में, किसी भी घटना का प्रमाणित किया जाना आवश्यक होता है, जो इस आयत में अनुपस्थित है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या सत्य ज्ञान नहीं दिया गया है।

आयत 125 (सूरए आराफ़, 7:125)

अनुवाद:
"वह कहेगा इलाही मैं तो (दुनिया में) आँख वाला था तूने मुझे अन्धा करके क्यों उठाया।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि जो व्यक्ति अल्लाह की याद से मुँह मोड़ेगा, उसे क़यामत के दिन अंधा बना कर उठाया जाएगा और वह पूछेगा कि क्यों ऐसा किया गया। Nyaya दर्शन के "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना या निर्णय का स्पष्ट तात्त्विक कारण होना चाहिए। इस आयत में, यह स्पष्ट नहीं किया गया कि क्यों एक व्यक्ति को उसकी नासमझी या ग़लत निर्णय के कारण अंधा किया जाएगा। बिना तात्त्विक कारण के यह दावा सिर्फ विश्वास और डर से प्रेरित प्रतीत होता है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित कारण या तात्त्विक व्याख्या नहीं दी गई है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
121	**Pramana**	**आदम और हव्वा की स्थिति का कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
122	**Hetu**	**तौबा स्वीकार करने के कारण का स्पष्टता का अभाव।**
123	**Vyapti**	**हिदायत का प्रभाव और परिणाम स्पष्ट और अनिवार्य नहीं है।**
124	**Pramana**	**क़यामत के दिन अंधा किए जाने का दावा बिना प्रमाण के है।**
125	**Hetu**	**अंधा किए जाने के कारण का कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है।**

सारांश:

इन आयतों में दिए गए दावे और विचार Nyaya दर्शन के विभिन्न तत्वों से मेल नहीं खाते। इन आयतों में तात्त्विक या प्रमाणित दृष्टिकोण का अभाव है, और ये कथाएँ विश्वास और धार्मिक आस्थाओं पर आधारित हैं, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक बनाती हैं।

Nyaya Darshan Critical Analysis of Quranic Verses (Surah A'raf, 7:126-130)

आयत 126 (सूरए आराफ़, 7:126)

अनुवाद:
"ख़ुदा फरमाएगा ऐसा ही (होना चाहिए) हमारी आयतें भी तो तेरे पास आईं तो तू उन्हें भुला बैठा और इसी तरह आज तू भी भूला दिया जाएगा।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि व्यक्ति ने अल्लाह की आयतों को भुला दिया और इस कारण से अल्लाह भी उसे भूल देगा। Nyaya दर्शन के "Pramana" (सत्य ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी धार्मिक या दार्शनिक विचार को प्रमाणित किया जाना चाहिए। यहां यह विचार केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है। इसका तार्किक आधार और साक्ष्य से इसे प्रमाणित करना असंभव है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या सत्य ज्ञान नहीं दिया गया है।

आयत 127 (सूरए आराफ़, 7:127)

अनुवाद:
"और जिसने (हद से) तजावुज़ किया और अपने परवरदिगार की आयतों पर इमान न लाया उसको ऐसी ही बदला देगें और आख़िरत का अज़ाब तो यक़ीनी बहुत सख़्त और बहुत देर पा है।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि जिसने अल्लाह की आयतों को न माना, उसे निश्चित रूप से सख्त बदला मिलेगा और आख़िरत का अज़ाब आएगा। Nyaya दर्शन में "Vyapti" का सिद्धांत यह कहता है कि किसी भी घटना का एक निश्चित और अनिवार्य परिणाम होना चाहिए। यहां पर यह दावा किया गया है कि न मानने पर सख्त अज़ाब मिलेगा, लेकिन यह सिद्ध नहीं होता कि ऐसा परिणाम अनिवार्य रूप से सभी मामलों में होगा। इस तरह का दावा प्रमाणहीन है और इसे तर्कसंगत तरीके से सिद्ध नहीं किया गया है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें किसी निश्चित परिणाम का बिना प्रमाणित कारण के दावा किया गया है।

आयत 128 (सूरए आराफ़, 7:128)

अनुवादः
"तो क्या उन (एहले मक्का) को उस (ख़ुदा) ने ये नहीं बता दिया था कि हमने उनके पहले कितने लोगों को हलाक कर डाला जिनके घरों में ये लोग चलते फिरते हैं इसमें शक नहीं कि उसमें अक़्लमंदों के लिए (कुदरते ख़ुदा की) यक़ीनी बहुत सी निशानियाँ हैं।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषणः
यह आयत कहती है कि अहल-ए-मक्का को यह नहीं बताया गया कि उनके पूर्वजों को अल्लाह ने नष्ट कर दिया था। Nyaya दर्शन में "Pramana" का सिद्धांत इस बात की आवश्यकता व्यक्त करता है कि किसी भी घटना या विश्वास को प्रमाणित या स्पष्ट किया जाना चाहिए। इस आयत में दावा किया गया है कि यह घटना उन लोगों को बताई गई थी, परंतु यह दावा बिना किसी वैज्ञानिक या ऐतिहासिक प्रमाण के किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह केवल एक धार्मिक कथन है, न कि तात्त्विक ज्ञान।

निष्कर्षः
यह आयत "Pramana" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई प्रमाणित या सत्य ज्ञान नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 129 (सूरए आराफ़, 7:129)

अनुवादः
"और (ऐ रसूल) अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से पहले ही एक वायदा और अज़ाब का) एक वक़्त मुअय्यन न होता तो (उनकी हरकतों से) फ़िरऔन पर अज़ाब का आना लाज़मी बात थी।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Hetu (Reason)

विश्लेषणः
यह आयत कहती है कि यदि अल्लाह की तरफ से पहले से कोई निश्चित समय और वायदा न होता, तो फ़िरऔन पर अज़ाब आ जाता। Nyaya दर्शन में "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी घटना का कारण स्पष्ट किया जाना चाहिए। इस आयत में यह स्पष्ट नहीं किया गया कि यह वायदा और समय क्यों था और कैसे यह अल्लाह द्वारा निर्धारित किया गया। बिना कारण के यह दावा तात्त्विक दृष्टि से कमजोर और अस्पष्ट है।

निष्कर्ष:
यह आयत "Hetu" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई स्पष्ट तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।

आयत 130 (सूरए आराफ़, 7:130)

अनुवाद:
"(ऐ रसूल) जो कुछ ये कुफ़्फ़ार बका करते हैं तुम उस पर सब्र करो और आफ़ताब निकलने के क़ब्ल और उसके ग़ुरूब होने के क़ब्ल अपने परवरदिगार की हम्दोसना के साथ तसबीह किया करो और कुछ रात के वक़्तों में और दिन के किनारों में तस्बीह करो ताकि तुम निहाल हो जाओ।"

आधारित तत्व (Nyaya Element): Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण:
यह आयत कहती है कि अपने परवरदिगार की तस्बीह करो ताकि तुम निहाल हो जाओ। Nyaya दर्शन के "Vyapti" (अनिवार्य संबंध) सिद्धांत के अनुसार, किसी कार्य का निश्चित और परिणामस्वरूप असर होना चाहिए। यहाँ पर तस्बीह करने को एक कार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि तस्बीह से निहाल होने का संबंध अनिवार्य रूप से कैसे होगा। इसका प्रमाण और तात्त्विक आधार अनुपस्थित है, जिससे यह कथन सिद्ध नहीं होता।

निष्कर्ष:
यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि तस्बीह करने और निहाल होने के बीच कोई स्पष्ट अनिवार्य संबंध नहीं दिखाया गया है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
126	**Pramana**	**आयतों को भुलाए जाने का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।**
127	**Vyapti**	**न मानने पर सख़्त अज़ाब का दावा बिना प्रमाणित परिणाम के किया गया है।**

128	**Pramana**	पूर्वजों के विनाश का दावा बिना प्रमाणित ज्ञान के किया गया है।
129	**Hetu**	फ़िरऔन पर अज़ाब आने के कारण का स्पष्ट तात्त्विक विवरण नहीं दिया गया है।
130	**Vyapti**	तस्बीह करने और निहाल होने के बीच कोई अनिवार्य संबंध सिद्ध नहीं किया गया है।

सारांश:

इन आयतों में दिए गए विचार और दावे Nyaya दर्शन के विभिन्न तत्वों से मेल नहीं खाते। इन आयतों में तात्त्विक कारण और प्रमाण की अनुपस्थिति है, जो इन्हें तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर बनाता है।

Nyaya Darshan Critical Analysis of Quranic Verses

आयत 131 (सूरए आराफ़, 7:131)

अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) जो उनमें से कुछ लोगों को दुनिया की इस ज़रा सी ज़िन्दगी की रौनक़ से निहाल कर दिया है ताकि हम उनको उसमें आज़माएँ तुम अपनी नज़रें उधर न बढ़ाओ और (इससे) तुम्हारे परवरदिगार की रोज़ी (सवाब) कहीं बेहतर और ज़्यादा पाएदार है।"

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि सांसारिक सुख अस्थायी हैं और धर्म से मिलने वाला सवाब स्थायी और अधिक उत्तम है, इसलिए सांसारिक सुखों से आंखें नहीं हटानी चाहिए और अल्लाह की तरफ़ ध्यान देना चाहिए।

हेतु (Reason):
यह तर्क इस विचार पर आधारित है कि सांसारिक सुख का अंत होता है, जबकि अल्लाह का सवाब स्थायी है। यह धार्मिक दृष्टिकोण से व्याख्यायित किया जाता है कि धर्म के मार्ग पर चलने से बेहतर और स्थायी फल मिलता है।

उदाहरण (Example):
सभी को यह महसूस होता है कि धन और भौतिक सुख अस्थायी होते हैं। उदाहरण के रूप में, किसी व्यक्ति को आज जो बड़ा सुख है, वह कल समाप्त हो सकता है, लेकिन यदि वह धर्म के मार्ग पर चले तो उसे स्थायी सुख प्राप्त होगा।

उपना (Application):
यह तर्क इस पर लागू होता है कि व्यक्ति को सांसारिक सुखों का त्याग नहीं करना चाहिए, लेकिन उन्हें प्राथमिकता न देकर अल्लाह की राह पर चलना चाहिए। लेकिन, यह तर्क समग्र रूप से सही नहीं है क्योंकि यह लोगों को सांसारिक खुशियों के प्रति अन्यथा अवहेलना करने की ओर प्रेरित करता है, जबकि मनुष्य को आत्मसंतुष्टि और भौतिक सुखों में भी संतुलन बनाए रखना चाहिए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत पूरी तरह से सार्वभौमिक रूप से उपयुक्त नहीं है क्योंकि यह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण को प्राथमिकता देती है और यह तर्कपूर्ण नहीं है कि सांसारिक सुख पूरी तरह से त्याग दिए जाएं। यह असंतुलन उत्पन्न करने वाला हो सकता है, और जीवन में संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है, जैसा कि भगवद गीता (2.47) में कहा गया है कि हमें कर्म करना चाहिए, लेकिन उसके फल से अप्रभावित रहना चाहिए।

आयत 132 (सूरए आराफ़, 7:132)

अनुवादः
"और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और तुम ख़ुद भी उसके पाबन्द रहो हम तुम से रोज़ी तो तलब करते नहीं (बल्कि) हम तो ख़ुद तुमको रोज़ी देते हैं और परहेज़गारी ही का तो अन्जाम बख़ैर है।"

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि मनुष्य को अपने घर वालों को नमाज़ का आदेश देना चाहिए और स्वयं भी नमाज़ पर पाबन्द रहना चाहिए, क्योंकि परमात्मा ही जीवन के सभी भौतिक संसाधनों (रोज़ी) को प्रदान करता है।

हेतु (Reason):
यह तर्क यह है कि परमात्मा ही जीवन के सभी साधनों का स्रोत है, इसलिए हमें अपनी जिम्मेदारियों को धर्म की तरफ़ से निर्धारित करना चाहिए और खुद को धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

उदाहरण (Example):
किसी व्यक्ति को यह समझाने की कोशिश करें कि भौतिक समृद्धि केवल मेहनत से नहीं आती, बल्कि आध्यात्मिक विश्वास और धर्म के पालन से भी व्यक्ति को स्थिरता मिलती है। उदाहरण के रूप में, जब एक व्यक्ति नियमित रूप से नमाज़ पढ़ता है, तो उसे न केवल मानसिक शांति मिलती है, बल्कि उसके जीवन में स्थिरता और समृद्धि भी आती है।

उपना (Application):
यह उदाहरण इस आयत पर लागू होता है कि व्यक्ति को अपनी आध्यात्मिक जिम्मेदारी निभानी चाहिए, लेकिन यह तर्क भौतिक और मानसिक संतुलन का पक्ष नहीं रखता। धर्म के पालन को प्राथमिकता देना ठीक है, लेकिन जीवन में भौतिक उपलब्धियों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक बहुत ही सीमित दृष्टिकोण अपनाती है, जो केवल आध्यात्मिकता को ही आवश्यक मानती है। यह आयत सार्वभौमिक दृष्टिकोण से उपयुक्त नहीं है क्योंकि जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों संतुलित रूप से महत्वपूर्ण हैं, जैसा कि वैशेषिक दर्शन में कहा गया है कि भौतिक दुनिया का महत्व और आध्यात्मिक दृष्टिकोण का संतुलन दोनों जरूरी हैं।

आयत 133 (सूरए आराफ़, 7:133)

अनुवाद:
"और (एहले मक्का) कहते हैं कि अपने परवरदिगार की तरफ से हमारे पास कोई मौजिज़ा हमारी मर्ज़ी के मुवाफिक़ क्यों नहीं लाते तो क्या जो (पेशीन गोइयाँ) अगली किताबों (तौरेत, इन्जील) में (इसकी) गवाह हैं वह भी उनके पास नहीं पहुँची।"

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि लोग धार्मिक चमत्कारी संकेतों की मांग करते हैं, जबकि पहले से ही पवित्र ग्रंथों में दिए गए प्रमाण उनके पास हैं।

हेतु (Reason):
यह तर्क यह है कि जो धार्मिक सत्य पहले से प्रस्तुत किए गए हैं, उन्हें नकारना और नए चमत्कारी संकेतों की मांग करना तर्कहीन है। धर्म और उसकी शिक्षाएं पहले से स्पष्ट रूप से सभी के पास मौजूद हैं।

उदाहरण (Example):
जैसे किसी वैज्ञानिक सिद्धांत को बार-बार सिद्ध किया जाता है, लेकिन फिर भी लोग उसे नकारते हैं और नए प्रमाणों की तलाश करते हैं। यही स्थिति धर्म में भी है, जब लोग पहले से मौजूद धार्मिक प्रमाणों को नकारते हैं।

उपना (Application):
यह उदाहरण इस आयत पर लागू होता है कि जब पहले से धार्मिक प्रमाण मौजूद हैं, तो नये संकेतों की मांग

करना तर्कसंगत नहीं है। यदि आप पहले से किसी चीज़ को जानने में असफल रहते हैं तो यह आपका दोष है, न कि प्रमाणों का।

निगमन (Conclusion):
यह आयत सत्य की ओर एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन यह किसी एक निश्चित दृष्टिकोण को अनिवार्य मानती है। इसके बावजूद, सार्वभौमिक दृष्टिकोण से यह सही नहीं हो सकता क्योंकि सभी लोगों के लिए एक ही तरीका सही नहीं हो सकता।

आयत 134 (सूरए आराफ़, 7:134)

अनुवाद:
"और अगर हम उनको इस रसूल से पहले अज़ाब से हलाक कर डालते तो ज़रूर कहते कि ऐ हमारे पालने वाले तूने हमारे पास (अपना) रसूल क्यों न भेजा तो हम अपने ज़लील व रूसवा होने से पहले तेरी आयतों की पैरवी ज़रूर करते।"

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि अगर पहले अज़ाब आता, तो लोग शिकायत करते कि हमें पहले रसूल क्यों नहीं भेजा गया।

हेतु (Reason):
यह तर्क यह है कि लोग हमेशा अपनी मुसीबतों के लिए ईश्वर को दोष देते हैं, बजाय इसके कि वे अपनी गलतियों को समझे। यह एक प्रकार का विरोधाभास प्रस्तुत करता है।

उदाहरण (Example):
मान लीजिए, एक व्यक्ति अपनी परेशानियों के लिए दूसरों को दोषी मानता है, जबकि वह स्वयं जिम्मेदार है। इसी तरह, लोग अपने दुखों के लिए भगवान को दोषी मानते हैं, जबकि उन्होंने सही मार्ग नहीं अपनाया।

उपना (Application):
यह उदाहरण इस पर लागू होता है कि लोग अपनी परिस्थितियों के लिए हमेशा दूसरों को दोषी मानते हैं, बजाय इसके कि वे अपने कर्मों को समझें और सुधारें।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि यह केवल बाहरी कारणों को दोषी मानती है, जबकि आत्मसमीक्षा और

सुधार की आवश्यकता है। उत्तरा मीमांसा (वेदांत) के अनुसार आत्मज्ञान और आत्मनिर्भरता की आवश्यकता होती है।

आयत 135 (सूरए आराफ़, 7:135)

अनुवाद:
"रसूल तुम कह दो कि हर शख़्स (अपने अंजाम का) मुन्तिज़र है तो तुम भी इन्तिज़ार करो फिर तो तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि सीधी राह वाले कौन हैं (और क़ज़ी पर कौन हैं) हिदायत याफ़ता कौन है और गुमराह कौन है।"

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि हर व्यक्ति अपने कर्मों के परिणाम का सामना करेगा और उसे सत्य और असत्य का भेद शीघ्र ही पता चलेगा।

हेतु (Reason):
यह तर्क यह है कि कर्मों के परिणाम समय के साथ सामने आएंगे और सच्चाई का पता चलेगा।

उदाहरण (Example):
मान लीजिए, कोई व्यक्ति अपनी गलत नीतियों का पालन करता है और किसी अन्य व्यक्ति ने सच्चे मार्ग का अनुसरण किया है, तो अंततः समय आने पर सबके कर्मों का परिणाम सामने आएगा।

उपना (Application):
यह उदाहरण इस आयत पर लागू होता है कि अंततः हर किसी को उसके कर्मों का परिणाम मिलेगा, और सत्य का पता चल जाएगा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत सत्य की ओर एक न्यायपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन यह तात्त्विक रूप से सभी को न्यायपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करती है। न्याय दर्शन के अनुसार, न्याय का पालन सभी व्यक्तियों के लिए उचित रूप से किया जाना चाहिए।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

संख्या		
131	**Pramana (Valid Knowledge)**	**सांसारिक सुखों का पूर्ण रूप से त्याग करने का विचार सार्वभौमिक नहीं है।**
132	**Prameya (Object of Knowledge)**	**जीवन में भौतिक संतुलन और आध्यात्मिकता के बीच संतुलन की आवश्यकता है।**
133	**Vyapti (Invariable Concomitance)**	**धार्मिक प्रमाणों को नकारना और चमत्कारी संकेतों की मांग तर्कहीन है।**
134	**Hetu (Reason)**	**लोग अपनी कठिनाइयों के लिए हमेशा बाहरी कारणों को दोष देते हैं।**
135	**Nigamana (Conclusion)**	**प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का परिणाम मिलेगा, लेकिन यह दृष्टिकोण सभी के लिए समान रूप से लागू नहीं है।**

निष्कर्ष:

इन आयतों का तार्किक मूल्यांकन दर्शाता है कि इनमें से कुछ विचार सार्वभौमिक रूप से असंगत हैं, और वे केवल एक निश्चित धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं, जो सभी मानवता के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता।